हिमज्योति

सितम्बर 2013 अंक-तृतीय

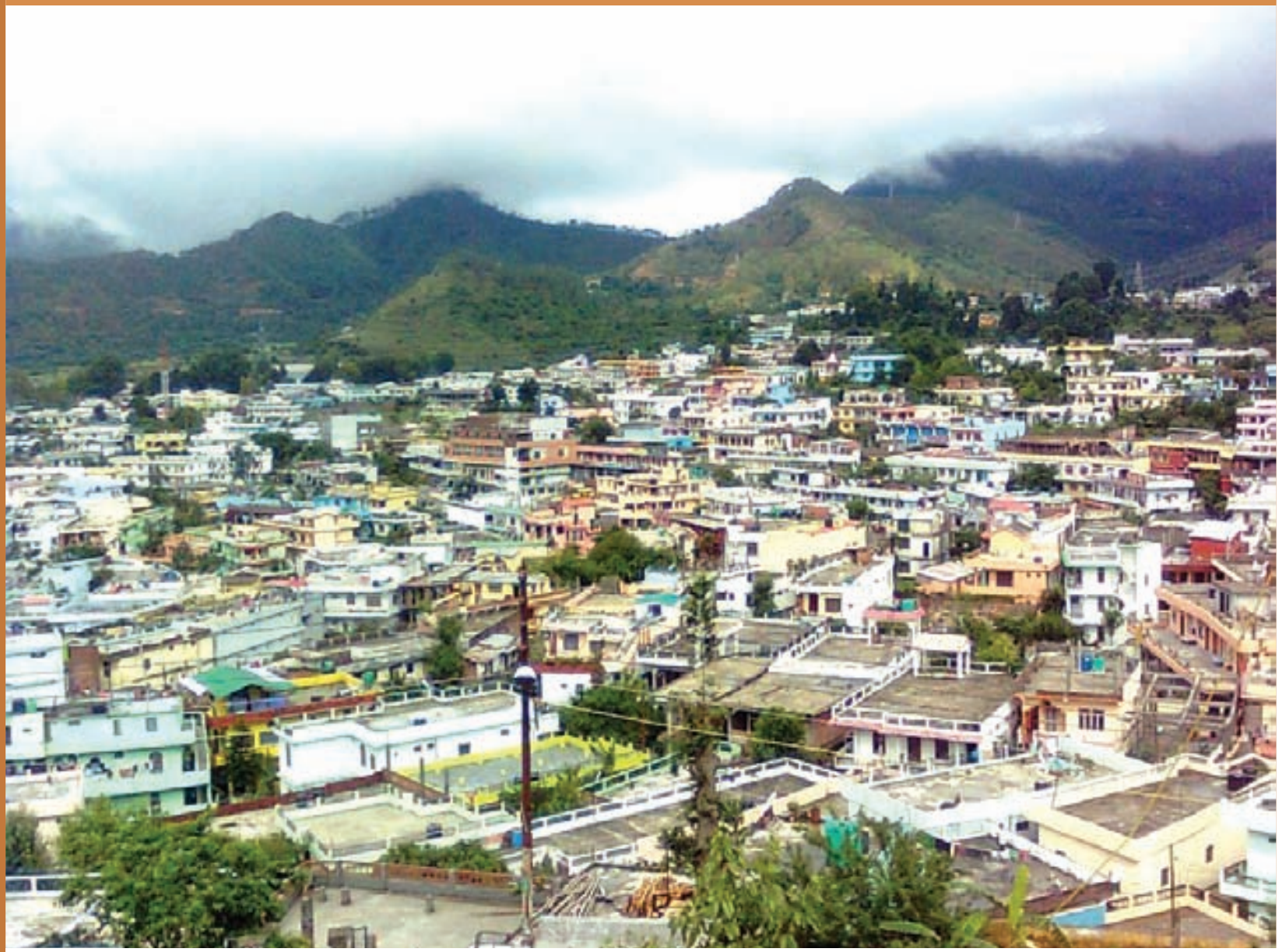

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक0),
उत्तराखण्ड, देहरादून

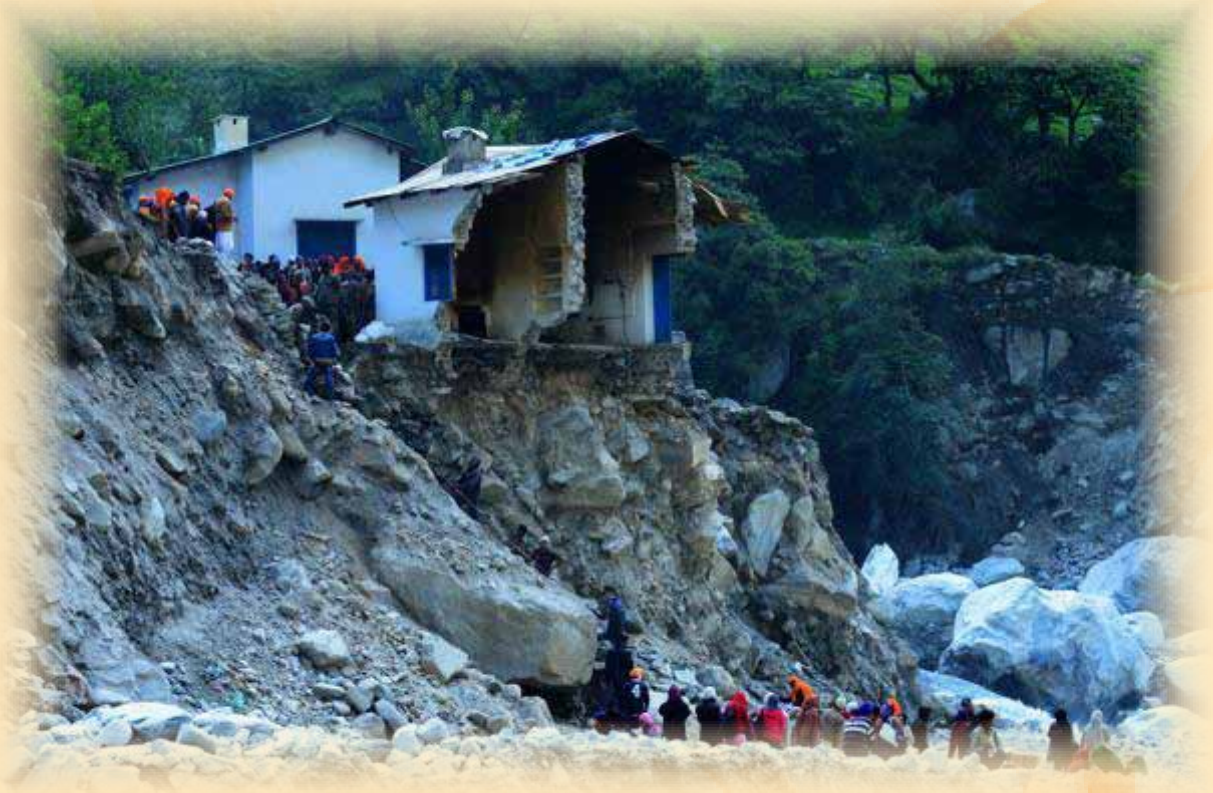

'हिमज्योति' का यह अंक उत्तराखण्ड में घटित आपदा के पीड़ितों को समर्पित है तथा इस अंक की कुछ रचनाएं इस आपदा के परिप्रेक्ष्य में लेखकों के दुखी मन एवं भावनाओं को प्रतिबिम्बित करती हैं।

सत्यमेव जयते

महुआ पाल
प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी)
उत्तराखण्ड, देहरादून

संदेश

''हिमज्योति'' का यह अंक मेरे विचार से मिश्रित भावनाओं को जागृत करता है। मेरा यह मानना है कि जहाँ एक ओर पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार एवं विभागीय रचनाशिल्पियों को प्रोत्साहित करने में निश्चित रूप से सहायक सिद्ध होंगी, पत्रिका नाम के अनुरूप ज्योति पुंज के रूप में प्रज्वलित रहेगी, वहीं दूसरी ओर राष्ट्रीयता की भावना को प्रबल करेगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

तथापि, देवभूमि उत्तराखण्ड में आयी भीषण आपदा, जिसमें बहुत बड़े स्तर पर जन–धन की क्षति हुई है तथा राज्य का बुनियादी ढाँचा छिन्न–भिन्न हुआ है, यह एक असीम दुःख एवं शोक का विषय है। इस आपदा में जिन्होंने अपने प्रियजनों को खोया है, उन सभी के प्रति मैं अपनी संवेदना व्यक्त करती हूँ। ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि शीघ्र ही वे इस दुःख से उबरकर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ेंगे।

मेरी ओर से सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को शुभकामनाएं जिनके अथक प्रयास से ही इस पत्रिका को साकार रूप देने में सफल हो सके हैं।

महुआ पाल

संरक्षक एवं निदेशक

पत्रिका परिवार

संरक्षक एवं निदेशक	:	श्रीमती महुआ पाल, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
प्रधान सम्पादक	:	श्री पुरूषोत्तम दास, उप महालेखाकार (लेखा एवं प्रशासन)
सम्पादक	:	श्री महेश कुमार बत्रा, उप महालेखाकार (निधि)
सलाहकार सम्पादक	:	श्री विनोद कुमार शर्मा, वरिष्ठ लेखाधिकारी
सहायक सम्पादक	:	श्री सुशील देवली, सहायक लेखाधिकारी
	:	श्री महावीर सिंह रावत, सहायक लेखाधिकारी
	:	श्री गणेश प्रसाद, सहायक लेखाधिकारी
संकलनकर्ता	:	श्री नीरज सिंह नेगी, संविदा कर्मी, श्री अशोक सिंह चौधरी, संविदा कर्मी
आवरण पृष्ठ, छायाचित्र एवं ग्राफिक्स संकलनकर्ता	:	श्री गणेश प्रसाद, सहायक लेखाधिकारी
मूल्य	:	राजभाषा के प्रति निष्ठा

रचनाकारों के विचारों से सम्पादक मण्डल की सहमति आवश्यक नहीं है।

सत्यमेव जयते

पुरूषोत्तम दास
उप महालेखाकार
(लेखा एवं प्रशासन)

प्रधान सम्पादक की कलम से

मेरे लिए यह हर्ष का विषय है कि हिन्दी पत्रिका 'हिमज्योति' का तृतीय अंक आपको समर्पित कर रहा हूँ। पत्रिका निश्चित रूप से राजभाषा नीति के अनुरूप कार्यालय में हिन्दी के प्रति अधिकारियों एवं कर्मचारियों की अभिरूचि में वृद्धि करेगी और दैनिक कार्यों में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करने के प्रति प्रोत्साहित करेगी। सूचना क्रान्ति के कारण हिन्दी भाषा अपनी पहचान सारे विश्व में बना चुकी है। अतः हमारा दायित्व बनता है कि हम सब हिन्दी को और अधिक सबल बनायें तथा हिन्दी के उत्तरोत्तर विकास के लिए निरन्तर प्रयासरत रहें। 'हिमज्योति' पत्रिका इस उद्देश्य में सफल होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

विगत दिनों, देवभूमि उत्तराखण्ड में जल प्रलय से हुई भीषण त्रासदी ने सम्पूर्ण राष्ट्र को झकझोर कर रख दिया। हजारों जिन्दगियों को सैलाब अपने साथ बहा ले गया। इतिहास की यह पहली घटना है जब जलप्रलय ने उत्तराखण्ड राज्य की रीढ़ समझे जाने वाले चार धाम एवं पर्यटन व्यवसाय को भारी क्षति पहुचाई है, जिससे राज्य का बुनियादी ढाँचा अत्यधिक प्रभावित हुआ है। चारों धामों व हेमकुंड साहिब में फँसे तीर्थ यात्रियों एवं स्थानीय लोगों को वहां से सकुशल बाहर निकालना ही पहली प्राथमिकता थी, जिसे हमारी सेना व सुरक्षाबल के जवानों ने अपने अदम्य साहस का परिचय देते हुए अत्यंत कुशलतापूर्वक अपने अंजाम तक पहुँचाया है, जिसके लिए वे भूरी–भूरी प्रशंसा के पात्र हैं। राज्य के पुनर्निर्माण हेतु हजारों हाथ उठ खड़े हुए हैं, जिनका योगदान निसंदेह राज्य के बुनियादी ढाँचे को सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध होगा।

जल प्रलय में जिन परिवारों ने अपने प्रियजनों को खोया है, मैं उनके प्रति अपनी संवेदना प्रकट करता हूँ तथा दुःख से शीघ्र उबरने की कामना करता हूँ। मुझे दृढ़ विश्वास है कि राज्य शीघ्र आपदा से उबर कर प्रगति के पथ पर अग्रसारित होगा।

मैं उन सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने पत्रिका के प्रकाशन में अपना अमूल्य योगदान दिया।

प्रधान सम्पादक

सत्यमेव जयते

महेश कुमार बत्रा
उप महालेखाकार
(निधि)

सम्पादकीय

हिन्दी पत्रिका ''हिमज्योति'' का तृतीय अंक आपके हाथों में सौंपते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष हो रहा है। अपने संवैधानिक कर्तव्यों एवं दायित्वों का निर्वहन करते हुए विभागीय रचनाकारों ने अल्पावधि में अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज व राष्ट्र के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने की कोशिश की है। इससे समाज व राष्ट्र के प्रति उनकी अवधारणा एवं अभिव्यक्ति की पुष्टि होती है, जो कि सराहनीय है।

16 जून 2013, को देवभूमि उत्तराखण्ड में आयी भीषण आपदा में बहुत बड़े स्तर पर जन–धन की क्षति हुई है तथा राज्य का बुनियादी ढांचा छिन्न–भिन्न हुआ है। चारों धामों में आयी भीषण आपदा में हजारों तीर्थ यात्री फँस गये थे तथा बहुत सारे तीर्थ यात्री सैलाब में समा गये या लापता हो गये। चारों धामों में फँसे तीर्थ यात्रियों को वहां से सुरक्षित बाहर निकालना केन्द्रीय सरकार व राज्य सरकार की पहली प्राथमिकता थी। हमारी सेना, आई. टी.बी.पी., एन.डी.आर.एफ. व पुलिस के जवानों ने मुस्तैदी के साथ अपने कर्तव्यों का निर्वहन किया। बड़ी संख्या में संकटग्रस्त तीर्थयात्रियों को आपदा ग्रस्त क्षेत्रों से बाहर निकाला गया तथा उनके घरों तक उन्हें पहुँचाया, जो कि प्रशंसनीय कार्य है।

आपदा की इस घड़ी में केन्द्रीय सरकार, राज्य सरकारों, स्वयंसेवी संस्थाओं, केन्द्र व राज्य सरकार के कई विभाग के अधिकारियों/कर्मचारियों एवं आम जनता की ओर से आपदा प्रभावित लोगों को आर्थिक सहायता दी गई है तथा राहत सामग्री की खेपें आपदा ग्रस्त क्षेत्रों में आपदा पीड़ितों में बाँटी गई हैं।

जब भी राष्ट्र पर कोई विपत्ति आयी हो चाहे वह युद्ध का क्षेत्र हो या कोई आपदा ग्रस्त क्षेत्र हो, राष्ट्र में सदा एकता की भावना जागृत हुई है। सम्पूर्ण राष्ट्र ने मिलकर ऐसी विपत्तियों का सामना किया है। वर्तमान समय में देवभूमि उत्तराखण्ड में आयी आपदा राष्ट्रीय एकता का परिचय दे रही है, यही एकता देवभूमि उत्तराखण्ड राज्य के पुनर्निर्माण में सहायक सिद्ध होगी, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

सकारात्मक सोच मानव को सृजनात्मक कार्य की ओर प्रेरित करती है। पत्रिका का उद्देश्य राजभाषा हिन्दी को आम बोल–चाल की भाषा में आम जन तक पहुँचाना है, जिसके लिए हम निरन्तर प्रयासरत हैं।

रचनाएं कभी भी अपने आप में परिपूर्ण नहीं होती हैं। अतः सुधी पाठकों की प्रतिक्रियाओं का हम सदैव स्वागत करते हैं, जो हमारे उत्साह में तथा पत्रिका के निखार में निश्चित रूप से सहायक सिद्ध होंगी।

पत्रिका परिवार की ओर से सभी पाठकों एवं रचनाकारों को शुभकामनाएं।

सम्पादक

"मेरा गाँव"

चित्रकार–गणेश प्रसाद, सहायक लेखाधिकारी

गत वर्ष प्रकाशित 'हिमज्योति' के द्वितीय संस्करण के लिए हमने उत्साहवर्द्धक प्रतिक्रियाएं प्राप्त की हैं। प्राप्त प्रतिक्रियाओं में से कुछ का उल्लेख नीचे किया गया है, जोकि हमें 'हिमज्योति' के इस संस्करण के लिए और अधिक प्रयास करने और गुणवत्ता में सुधार हेतु प्रेरणा एवं विश्वास देती हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि यह अंक पूर्व की अपेक्षा और अधिक रूचिकर सिद्ध होगा तथा आप इस अंक के सम्बन्ध में अपने अमूल्य सुझाव/ प्रतिक्रियाओं से हमें पूर्ववत् अवगत कराएंगे। आपकी प्रतिक्रियाएं हमारे लिए पुरस्कार के समान हैं।

महोदय,

आपके पत्र सं0 274 दिनांक 13.12.2012 के साथ कार्यालय की पत्रिका ''हिमज्योति'' का द्वितीयवां अंक प्राप्त हुआ। एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत मनमोहक है। पत्रिका में समाविष्ट रचनाएं पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय है। विशेषकर ''अशोक सिंह चौधरी'' की कविता ''माँ का आँचल'' श्री भारतेन्दु गुप्ता की कविता ''अन्तर्द्वन्द'', सुशील देवली की कविता ''नहीं मिलती'' विचार प्रधान प्रेरक एवं उपयोगी है।

पत्रिका के उत्तम सम्पादन एवं संकलन हेतु सम्पादक मण्डल को धन्यवाद तथा पत्रिका के प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

उपमहालेखाकार (प्रशासन)
महालेखाकार (सा. एवं सा.क्षे.लेप) का कार्यालय,
ओडिशा, भुवनेश्वर

महोदय,

उपर्युक्त विषयक आपके कार्यालय के पत्रांक–हिन्दी प्रकोष्ठ/गृह पत्रिका ''हिमज्योति''/2012–13/ 231 दिनांक 13.12.12 द्वारा हिन्दी पत्रिका ''हिमज्योति'' के द्वितीय अंक की एक प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई।

पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं अच्छी, प्रभावी, सारगर्भित व पठनीय हैं। पत्रिका की साज–सज्जा व आवरण पृष्ठ बहुत ही आकर्षक है।

सफल संपादन एवं प्रकाशन के लिए संपादक एवं प्रकाशन समिति के सभी सदस्यगण बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति हेतु शुभकामनायें।

व० लेखा अधिकारी, बिहार, पटना(हिन्दी कक्ष)
महालेखाकार (लेखा एवं हक०) का कार्यालय, बिहार, पटना

कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका ''हिमज्योति'' के द्वितीय अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, उसके लिए धन्यवाद।

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं, कहानियां, कविताएं एवं लेख अत्यंत रोचक, पठनीय तथा ज्ञानवर्धक हैं। विशेष रूप से श्री महावीर सिंह रावत द्वारा लिखित कविता 'घर की दीवारें' एवं दीपा पंवार द्वारा लिखित लेख 'जाने कहां होगी वह' रोचक एवं प्रेरणादायी हैं।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना और संपादक मंडल को शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखाधिकारी/रा.भा.
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)–I, महाराष्ट्र

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी गृह पत्रिका ''हिमज्योति'' के द्वितीय अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। एतदर्श आभार स्वीकार करें। अंक में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक, सुरूचिपूर्ण तथा प्रभावशाली लगी।

शोधपरकता तथा तथ्यात्मकता इस अंक की प्रमुख विशेषता है जैसे श्री अशोक सिंह चौधरी द्वारा रचित कविता 'माँ का आँचल' में बताया गया है कि माँ का दुलार कभी कम नहीं होता और माँ जैसा कोई रिश्ता नहीं होता। पत्रिका की एक अन्य कविता 'घर की दीवारें' जो श्री महावीर सिंह रावत द्वारा रचित है, जिसमें भारत माता के प्रति कवि का प्रेम स्पष्ट होता है जो अपने स्वयं के अन्दर एक प्रेरणा अपने घर की दीवारों से ही प्राप्त करता है।

पत्रिका में शोधपरक लेखों, कहानियों व कविताओं के रूप में उपस्थित विविधता पत्रिका की उपलब्धि है। इस प्रकार राजभाषा के प्रचार–प्रसार के लिए आपका प्रयास सराहनीय है और इस दिशा में प्रयासरत आपका पत्रिका–परिवार इसके लिए बधाई का पात्र है।

लेखापरीक्षा अधिकारी (हि०क०–ले०प०),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा),
हिमाचल प्रदेश, शिमला–171003

आपके कार्यालय के पत्र संख्याः हिन्दी प्रकोष्ठ/गृह पत्रिका ''हिमज्योति''/2012–13/262 दिनांक 13.12.2012 के अंतर्गत हिन्दी त्रैमासिक गृह पत्रिका ''हिमज्योति'' के द्वितीय अंक की प्रति प्राप्त हुई, जिसकी पावती प्रेषित की जाती है। पत्रिका के उत्तरोत्तर हेतु हमारी ओर से शुभ कामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी(हिन्दी कक्ष),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
जम्मू व कश्मीर, श्रीनगर

हिंदी गृह पत्रिका ''हिमज्योति'' के द्वितीय अंक की एक प्रति प्राप्त हुई।

धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सभी विषय रोचक एवं पठनीय है। विशेष रूप से श्री देवचन्द द्वारा लिखित ''दोस्त और यादें'', रामबीर सिंह द्वारा लिखित ''कैलाश मानसरोवर यात्रा'', श्री अरूण कुमार चौधरी द्वारा लिखित ''योग निद्रा–तनाव से मुक्ति'' और एन.के. सुब्रमणियन द्वारा लिखित ''समय का महत्व'' सराहनीय हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मण्डल को हमारे कार्यालय की ओर से बधाई। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं स्वर्णिम भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), तमिलनाडु

हिन्दी गृह पत्रिका ''हिमज्योति'' के द्वितीय अंक की एक प्रति प्राप्त हुई तद्हेतु धन्यवाद।

पत्रिका का मुख्यपृष्ठ बहुत आकर्षक है और पत्रिका में प्रकाशित लेख कविताएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं।

(पेम्बा लामा),
वरिष्ठ लेखा अधिकारी/प्रशासन,
कार्यालय वरिष्ठ उप–महालेखाकार (ले० एवं ह०), सिक्किम

आपके पत्र सं0 हिन्दी प्रकोष्ठ/गृह पत्रिका ''हिमज्योति''/2012–13/263 दिनांक 13.12.2012 द्वारा प्रेषित गृह पत्रिका ''हिमज्योति'' की द्वितीय अंक की प्राप्ति हुई।

पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ/कविताएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं, शुभकामनाओं के साथ।

स.ले.प.अ./हिन्दी प्रकोष्ठ,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
झारखण्ड, राँची–834002

आपके कार्यालय द्वारा भेजी गई हिन्दी पत्रिका ''हिमज्योति'' इस कार्यालय को प्राप्त हुई है। आपके कार्यालय के कर्मचारियों एवं अधिकारियों ने प्रशंसनीय लेखों एवं सुन्दर कवितायें लिखने का प्रयास किया गया है इसलिए सराहनीय है। यह पत्रिका निरंतर छपती रहें यह हमारी शुभकामनायें और शुभेच्छाए हैं।

(1) मुख्यपृष्ठ और अंतिमपृष्ठ मनोहर है।

(2) श्री भारतेन्दु गुप्ता जी की रचना ''अन्तर्द्वन्द'' तथा श्री रामवीर सिंह जी द्वारा लिखित ''कैलाश मानसरोवर यात्रा''

यात्रावृत्तांत विशेष रूप से सराहनीय है।

हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा),
गुजरात, नवरंगपुरा, अहमदाबाद–380009

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका **''हिमज्योति''** के द्वितीय अंक की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर अपनी भव्यता लिए हुए है, छायाचित्रों ने इसे ओर भी मनोरम बना दिया है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं पठनीय एवं सराहनीय है। विशेषकर श्री इफ्तेखार अहमद की कविता ''हिन्दी सबसे प्यारी भाषा'' एवं श्री प्रह्लाद सिंह की कविता ''भ्रष्ट अगर मानव ना होता'', श्री सुशील देवली की गजल ''मुसाफिर'', श्री रामबीर सिंह का यात्रा संस्मरण ''कैलाश मानसरोवर यात्रा'' एवं श्री अरूण कुमार चौधरी का स्वास्थ्य से संबन्धित लेख ''योग निद्रा–तनाव से मुक्ति'' आदि सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के कुशल संपादन व सहयोग हेतु सम्पादक मण्डल एवं रचनाकार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

(मनोरमा खण्डेलवाल),
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/रा.भा. अनुभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा) राजस्थान,
जनपथ, जयपुर–302005

हिन्दी पत्रिका ''हिमज्योति'' के द्वितीय अंक की पावती धन्यवाद सहित स्वीकार की जाती है। इस अंक के समस्त लेख/रचनाएं उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं। श्री अशोक सिंह चौधरी की कविता 'माँ का आँचल', प्रह्लाद सिंह की कविता 'भ्रष्ट अगर मानव न होता' तथा एन0के0 सुब्रहमणियम का लेख 'समय का महत्व' विशेष रूप से सराहनीय हैं।

मैं पत्रिका के उज्जवल भविष्य एवं सतत् प्रगति की कामना करता हूँ।

कल्याण अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (जनरल एण्ड सोशल सेक्टर आडिट),
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

आपके कार्यालय की हिन्दी गृहपत्रिका ''हिमज्योति'' के द्वितीय अंक की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। इस पत्रिका में समाहित सभी रचनायें उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका का प्रस्तुत अंक सराहनीय, पठनीय एवं संग्रहणीय है।

श्री भारतेन्दु गुप्ता की कविता ''अन्तर्द्वन्द्व'', श्री प्रह्लाद सिंह की कविता ''भ्रष्ट अगर मानव ना होता'', श्री देवचन्द की गजल ''दोस्त और यादें'', सुश्री दीपा पंवार का लेख ''जाने कहाँ होगी वह'' एवं श्री ए.के. सुब्रहमणियन की रचना ''समय का महत्व'' विशेष सराहनीय हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

(हरीश चंद्र माखीजा),
हिंदी अधिकारी/राजभाषा कक्ष,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक०), राजस्थान

आपके कार्यालय से प्रकाशित हिन्दी गृह पत्रिका **''हिमज्योति''** के द्वितीय अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का मुखपृष्ठ व साज सज्जा अति सुन्दर व मनोहर है। समस्त रचनाएं सारगर्भित व विचारोत्तेजक हैं। पत्रिका के निरंतर उज्जवल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं करते हैं।

लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा) दिल्ली,
ए.जी.सी.आर.भवन, आई.पी.एस्टेट,
नई दिल्ली–110002

आपके कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका ''हिमज्योति'' के द्वितीय अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं रोचक एवं ज्ञानवर्धनक हैं। विशेषकर श्री इफ्तेखार अहमद की कविता ''हिन्दी सबसे प्यारी भाषा'' श्री संजीव जखमोला की कविता ''आजाद देश के गुलामों'', श्री प्रह्लाद सिंह की कविता ''भ्रष्ट अगर मानव ना होता'', श्री अमरजीत सिहं का लेख भा॰ले॰एवं ले॰प॰ विभाग का चिन्ह को अंगीकार करना, श्री अशोक सिंह चौधरी की ''राजजात यात्रा'' तथा श्री बी.एल. श्रीवास्तव का लेख ''लोकपाल बनाम जनलोकपाल'' विशेष रूप से उल्लेखनीय एवं सराहनीय रचनाएं हैं। पत्रिका का मुख्य, भीतरी पृष्ठ एवं अंतिम पृष्ठ अत्यंत आकर्षक हैं। पत्रिका में प्रकाशित किये गए प्राकृतिक एवं दर्शनीय स्थलों के चित्र अत्यंत सुंदर एवं मनमोहक हैं तथा पत्रिका को सौंदर्य प्रदान करते हैं।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्जवल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(अनिल त्रिपाठी),
हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)–II, महाराष्ट्र, नागपुर

उपर्युक्त विषय पर आपके पत्र सं0 हिन्दी प्रकोष्ठ/गृह पत्रिका ''हिमज्योति''/2012–13/254 दिनांक 13.12.2012 के साथ प्रेषित हिंदी पत्रिका ''हिमज्योति'' के द्वितीय अंक की प्रति प्राप्त हुई है। पत्रिका की सभी रचनाएँ रोचक एवं ज्ञान वर्धक हैं। श्री भारतेन्दु गुप्ता की रचना 'अन्तर्द्वन्द', अशोक सिंह चौधरी 'राही' सराहनीय रचना हैं।

आशा है कि पत्रिका के प्रचार–प्रसार के साथ कार्यालय के कर्मचारियों/अधिकारियों की हिंदी में मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य की शुभ कामनाएँ।

रामलाल शर्मा, हिंदी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) असम,
बेलतला, गुवाहाटी–29

हर्ष के साथ सूचित करना है कि आपके कार्यालय की हिन्दी गृहपत्रिका ''हिमज्योति''–II अंक की प्राप्ति हमारे कार्यालय में सुनिश्चित हो गयी है।

पत्रिका में श्री संजीव जखमोला (व0ले0) द्वारा रचित 'अनूठा बचपन' एवं सुश्री दीपा पंवार (क0अ0) द्वारा लिखित ''जाने कहाँ होगी वह'' अत्यंत रूचिकर लगी।

हम आशा करते हैं कि आप इसी तरह भविष्य में भी निरन्तर पत्रिका निकालकर हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे।

''सूचनार्थ प्रेषित''

लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा), उत्तराखण्ड

पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं अंतिम पृष्ठ में प्रकाशित सभी छायाचित्र अत्यन्त मनमोहक हैं। आद्योपान्त पत्रिका की साज–सज्जा आकर्षक है। पत्रिका में समाविष्ट रचनाएँ पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय हैं। विशेषकर श्री बी. एल. श्रीवास्तव का लेख लोकपाल बनाम् जन लोकपाल, श्री रामबीर सिंह का पर्यटन लेख कैलाश मानसरोवर तथा श्री अरूण कुमार चौधरी का स्वास्थ्य संबंधी लेख योग निद्रा–तनाव से मुक्ति रोचक, ज्ञानवर्धक एवं विचारप्रधान लेख हैं। जाने कहाँ होगी वह मार्मिक कथा है। हिन्दी सबसे प्यारी भाषा, माँ का आँचल, आजाद देश के गुलामों, जीने की चाह, भ्रष्ट अगर मानव ना होता कविताएँ तथा दोस्त और यादें, नहीं मिलती गजल प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के उत्तम संपादन व संकलन् हेतु संपादक मंडल को साधुवाद तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखाधिकारी/राजभाषा,
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) प्रथम का कार्यालय, मध्य प्रदेश,
''लेखा भवन'', ग्वालियर–474002

उपर्युक्त विषय से संबंधित आपके कार्यालय के दिनांक 13.12.2012 के पत्र संख्याः हिन्दी प्रकोष्ठ/गृह पत्रिका हिमज्योति/2012–13/275 के माध्यम से आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिन्दी पत्रिका ''हिमज्योति'' के द्वितीय अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। तदहेतु आभार स्वीकार करें। इस अंक में प्रकाशित सभी रचनाएं स्तरीय व विचारोत्तेजक हैं। विशेष तौर पर श्री अशोक सिंह चौधरी (माँ का आँचल), भारतेन्दु गुप्ता (अन्तर्द्वन्द) तथा संजीव जखमोला (आजाद देश के गुलामों) की रचनाएं विशेष रूप से प्रभावित करती हैं। पत्रिका की साज–सज्जा भी उत्तम है।

एक श्रेष्ठ और सार्थक अंक के लिए संपादक मंडल तथा सभी रचनाकारों को साधुवाद तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर सफलता के लिए 'सुगन्धा' परिवार की हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी (प्रशासन–11**),**
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), पंजाब,
प्लाट नं. 21**, सैक्टर** 17**, चण्डीगढ़–**160017

अनुक्रमणिका

विधा	क्रम संख्या	रचना	लेखक	पृष्ठ संख्या
कविता	1	हिमज्योति	अशोक सिंह चौधरी	1.
लेख	2	रूद्र का रौद्र रूप	भास्करानन्द त्रिपाठी	2.
कविता	3	नहीं चाहा उसने	कु0 रेखा	4.
कविता	4	मुसाफिरखाना	महावीर सिंह रावत	7.
लेख	5	भारतीय समाज और महिलाएं	अश्विनी कुमार पाण्डेय	8..
कविता	6	बेटी की जुबां	अशोक सिंह चौधरी	10.
कविता	7	पुरूष की सोच	प्रशांत जोशी	11.
लेख	8	दहेज कुप्रथा की शिकार बेटियां	एस0एस0 तोमर	12.
कविता	9	बचपन की बरसात	इफ्तेखार अहमद	14.
कविता	10	हुक्का	सुशील देवली	17.
कविता	11	सरहद की पुकार	अरविन्द कुमार उपाध्याय	18.
कहानी	12	पश्चाताप	रामबीर सिंह	19.
ग़जल	13	चश्मा	सुशील देवली	21.
कविता	14	समाज की दुर्दशा	प्रशांत जोशी	22.
हास्य व्यंग्य	15	नया युग जो आ गया	अशोक सिंह चौधरी	25.
लेख	16	समाज का नैतिक पतन	महावीर सिंह रावत	26.
कविता	17	आज का आइना	रामबीर सिंह	28.
लेख	18	मानव मन की अद्भुत शक्तियां	एस0जे0 राय चौधरी	29.
कविता	19	विनाश से विकास की ओर	महावीर सिंह रावत	31.
कहानी	20	बेचारा	गणेश प्रसाद	32.
कविता	21	कुदरत का कहर	महावीर सिंह रावत	34.
लेख	22	यदि महिलाएं विश्व पर शासन करतीं	कु0 रेखा	37.
हास्य व्यंग्य	23	जो आप कहो	बृजेश कुमार	39.
लेख	24	सूचना का अधिकारः एक कारगर एवं प्रभावी कानून	विनोद कुमार शर्मा	40.
लेख	25	हमारे शुभ चिन्ह	एन0के0 सुब्रमनियन	43.
संकलन	26	अंग्रेजी शब्दों के सरल एवं उपयुक्त हिन्दी शब्द	विनोद कुमार शर्मा	46.

कार्यालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों द्वारा खींचे गए छायाचित्र उत्तराखण्ड की विहंगम सुन्दरता एवं शान्ति को प्रतिबिम्बित करते हैं।

हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि यह शांतचित्तता एवं प्राकृतिक सौन्दर्य उत्तराखण्ड की पावन धरती पर शाश्वत बना रहे और भूतकाल की वह भयानक तबाही, सदा के लिए, हमारी स्मृति से मिट जाए।

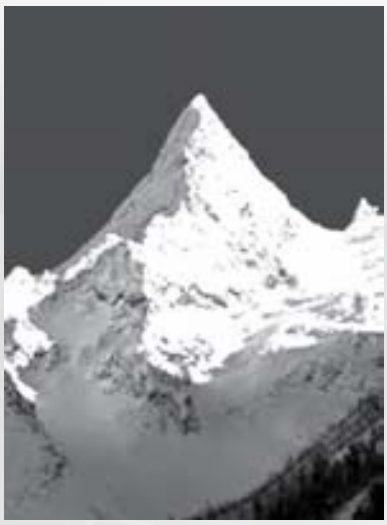

''हिमज्योति''

अशोक सिंह चौधरी
संविदा कर्मी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

हिम आकर्षण'' रूप धरा
गगन, अम्बर, नभ सारा
मेघ का गर्जन हुआ
वन में बिखरी नृत्य छठा

''हिमज्योति'' से, उज्जवल घटा
श्वेत रूपी चादर चढ़ा
है गर्व से, शीष खड़ा
''हिम आकर्षण'' रूप धरा

पर्वतों से बहती, अविरल धारा
प्रकृति रूप, सुसज्जित उनियारा
मधुर गीत संग, गूंज छठा
''हिमज्योति'' से, उज्जवल घटा

पुल्लकित होता, मन है मेरा
देख हिम पर्वत, रूप अनोखा
लहराती हवा का अहसास सुनहरा
''हिम आकर्षण'' रूप धरा

देव–ऋषि, तपोभूमि, मुग्ध धरा
मंत्र उच्चारण, गगन–नभ सारा
धन्य भूमि उत्तराखण्ड धरा
''हिम आकर्षण'' रूप धरा
''हिमज्योति'' से, उज्जवल घटा

''रूद्र का रौद्र रूप''

भास्करानन्द त्रिपाठी
सहायक लेखाधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

विक्रम सम्वत् 2070 आषाढ़ मास, ज्येष्ठ सुदी सप्तमी अर्थात 16 जून 2013 को केदार घाटी में घटित प्रलयकारी घटना ने हजारों लोगों को लील लिया, जो बच गये उनके मन मष्तिष्क को झकझोर कर रख दिया। हजारों लोग बेघर हो गये, जानवरों के हताहत होने की कोई गिनती सम्भव न हो सकी। प्रकृति के कोप का यह कहर अभूतपूर्व एवं अनिवर्चनीय था।

जहाँ एक ओर श्रद्धालुओं एवं तीर्थयात्रियों के आस्था का सैलाब अपनी चरम सीमा पर था। वही बच्चे, बूढ़े व नवदम्पति उल्लास से भरपूर केदार घाटी के नयनाभिराम बर्फीले दृश्यों को देखने में मग्न थे। साधु सन्यासियों व शिव भक्तों के झुण्ड ओंकार की ध्वनि में निमग्न थे। बादलों की उमड़ धुमड़ और वर्षा का होना केदार घाटी की दैनिक प्रवृत्ति रही है। शायद यही कारण था कि इस प्रलयकारी घटना का पूर्वाभास किसी को न हो सका।

ऊँ कार वह शब्दध्वनि है, जिसे ब्रहमाण्ड की उत्पत्ति एवं विलय का कारक माना जाता है। ऊँ कार शब्द का स्वरूप स्वयं में त्रिगुणात्मक माना जाता है। पाश्चात्य विद्वानों ने इसी ऊँ कार की ध्वनि को ''बिग बैंग'' कह कर ब्रहमाण्ड की उत्पत्ति को प्रतिपादित किया।

माल्थस ने कहा था कि प्रकृति सन्तुलन साधना जानती है। इस घटना के बाद यह उक्ति चरितार्थ होती प्रतीत हुयी।

प्रकृति में असन्तुलन की स्थिति पैदा करने के लिये मानव स्वयं जिम्मेदार है। भौतिकवादी प्रवृतियाँ इस असन्तुलन के महत्वपूर्ण कारक हैं। मनुष्य अपनी भौतिकवादी आकांक्षाओं की पूर्ति के लिये प्रकृति का जिस निर्ममता के साथ दोहन कर रहा है, ये प्राकृतिक घटनायें कदाचित उसी के परिणाम हो सकती हैं। पहाडों की नग्न छाती पर भौतिकवादी मानसिकता द्वारा जिन विस्फोटकों का उपयोग कथित विकास के नाम पर किया गया वह अनुचित एवं अवैज्ञानिक सिद्ध हुआ। अविरल बहती प्राकृतिक जलधाराओं को अपने हित साधने के अविवेक पूर्ण तरीकों से अवरूद्ध कर दिया गया। हरे–भरे जंगलों का निरन्तर पातन प्रकृति को कुपित करने के लिये काफी था।

16 जून 2013 की वह घटना कामायनी की उस प्रलय की याद दिलाती है जब सम्पूर्ण सृष्टि जलमग्न हो गयी थी। मात्र वैवश्वत मनु किसी उत्तुंग बर्फीली चोटी पर जीवित थे और प्रलय के इस दृश्य को देखकर हृदय विदलित हुये थे। आज भी वही हुआ था। असीमित जलप्रवाह हमारे भौतिकवाद की सम्पूर्ण सृष्टि को अपने में प्रवाहित कर रहा था। ईट, पत्थरों और लोहे से खड़ी विशाल इमारतें हमारी आँखों के सामने धराशायी होकर प्रवाहित हो रही थी। हमारे अपने प्रिय जन, आँखों से एक–एक कर ओझल हुये जा रहे थे। चारों ओर जीवन के लिये चित्कार थी, सर्वत्र हा–हाकार था, भागदौड़ का कोई रास्ता सूझता नहीं था। अपने–पराये, पशु–पक्षी जलधारा के तीव्र प्रवाह में विलीन हुये जा रहे थे। काल के पंजों से बचने के लिये हर कोई अनुनय–विनय कर रहा था। रूदन और चित्कार के साथ, जिसको जो भी सम्बल दिखायी देता उसी पर लिपट जाता था, जिस भौतिक सम्पत्ति और सामग्री के लिये कभी लोग युद्धरत हो जाते थे, उसे कोई नहीं देखना चाहता था। मात्र जीवन को बचाने की वह जद्दोजहद कई घण्टों तक जारी रही और घटना के बाद परवर्ती पीड़ाओं का अन्तहीन सिलसिला भी रूह कंपा देने वाला था।

किसी अज्ञात और अनन्त में अपनों को तलाशने वालों की वेदना धैर्य और साहस का उपहास करती नजर आयी। निर्जीव, बिखरी लाशें, विकृत चेहरे, कटे अंग, बिखरी हुयी भौतिक सामग्री ने शिव भूमि को श्मशान में तब्दील कर दिया। चारधाम का ऐसा विभत्स दृश्य शायद हीरोशिमा व नागासाकी की आणविक घटना का याद दिलाता है। यह वह घटना थी, जिसने जीवन की क्षण भंगुरता और निस्सारता का अहसास कराया था। अपने स्वत्व की तलाश में पथरायी आँखें न चाहते हुये भी इस विभत्सता को देखने के लिये अभिशप्त थीं। यह घटना हमारे सोचने और समझने के लिये कई प्रश्नों को छोड़ गयी।

क्या हमारे विकास का यही मॉडल सही है? क्या विकास के तौर तरीके दूसरे नहीं अपनाये जा सकते हैं?

क्या जलधाराओं को रोकना प्रकृति के लिये हितकर है? अपनी आंकाक्षाओं की पूर्ति के लिये वन और पर्यावरण की अपूरणीय क्षति किस सीमा तक की जा सकती है? यदि प्रकृति रौद्ररूप धारण कर ले तो हमारे पास बचाव के साधन क्या है?

प्रकृति ने इस भौतिकवादी विकास को बौना साबित करते हुए एक चुनौती दी है–

कन्दरा के जीव थे तुम
फिर कन्दरा में लौट जाओ।
छोड़ दो विशान व्यंजन
फिर वही जड़ मूल खाओ।।

''विपत्ति से बढ़कर अनुभव सिखाने वाला कोई विद्यालय आज तक नहीं खुला है।''**– मुंशी प्रेमचंद**

"नहीं चाहा उसने"

कु० रेखा
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा), उत्तराखण्ड

उस ईश्वर ने सोचा भी न होगा कभी कि तरक्की
पा जाएगी इतनी, सृष्टि उसकी,
कि अब उसका नाम ही काफी है भोजन के दो निवाले के लिए,
नाम उसका लेते हैं हम दिन–रात,
लेकिन वो रहता दुविधा में है हर–दम
कि हम पुकारते हैं हकीकत में उसे
या महज एक छलावा है उसके साथ
कैसे बढ़ाए भी हाथ वो मदद के लिए
कि एक अदद विश्वास ही काफी है उस ईश्वर के लिए,
नहीं चाहा उसने कभी कि मुझे पत्थरों में ढूँढ़ों
मुझे पाने या रिझाने को इतनी मुश्किलें उठाकर,
तुम जाओ पहाड़ों पर या गुफाओं में,
नहीं चाहा उसने कभी कि मेरे नाम पर मंदिर मस्जिद बनाओ,
और दान–पेटी को अपनी तिजोरी में उडेल दो,
नहीं चाहा उसने कि छप्पन भोग के लिए छप्पन हजार को अनदेखा करो
नहीं चाहा उसने कि दूध छीनकर दुधमुँहों और जरूरतमंदों का,
मुझ पर दूध की नदियां बहाओ
नहीं चाहा कि नाम मेरा ले–लेकर ट्रस्ट बनवाओ
उनकी आड़ में तुम निर्लज्जता का नाच दिखाओ
नहीं चाहा उसने कि सत्संग के लिए जमीनें छीनों
और साधु–बाबाओं की बाढ़ सी लाओ।
नहीं चाहा उसने कि चुनावों में भी उसको घसीटा जाए
और बाद चुनाव के उसी को घसीट–घसीट कर मारा जाए
हाँ उसने चाहा है जरूर कि अपने घर को मेरा मंदिर बनाओ
मैं हूँ हर कहीं, वहीं जहाँ दिलों में प्रेम है, सद्भाव है, छल नहीं,
मैं हूँ भी उसी का कि जो मेरे नाम से नहीं, अपने काम से जाना जाए,
मैं हूँ उसी का जो मरने को न छोड़े किसी गरीब, असहाय को,
कि मुझे दूध, घी, छप्पन भोग की नहीं, मुझे बस जरूरत है निस्वार्थ प्रेम की
कि मुझे ईश्वर बनाकर तुम्हीं ने पूजनीय बना डाला है,
मैं तो मित्र हूँ तुम्हारा कि मुझे अपने दिल में जगह दो ईंट के मंदिर में नहीं।।

अरूण यह मधुमय देश हमारा ।
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा ।।
सरल तामरस गर्भ विभा पर नाच रही तरूशिखा मनोहर
छिटका जीवन हरियाली पर मंगल कुंकुम सारा ।।
-जयशंकर प्रसाद

छायाकार - गणेश प्रसाद, सहायक लेखाधिकारी

गंगोलीहाट (पिथौरागढ़)
छायाकार - गणेश प्रसाद, सहायक लेखाधिकारी

टिहरी बांध (टिहरी)
छायाकार - सुनील कौल, वरिष्ठ लेखाकार

"मुसाफिरखाना"

महावीर सिंह रावत
सहायक लेखाधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

तू कहे ये घर मेरा
मैं कहूं ये घर मेरा
ये घर न तेरा न मेरा
ये घर दो पल का बसेरा।

चलते मुसाफिर का
कहां कोई ठिकाना
पल में बदल जायेगा
ये मुसाफिर खाना।

फिर मुसाफिर होकर
घर अपना क्यों बतायें
ये जिन्दगी जब अपनी नहीं
तो दूसरों को क्यों सतायें।

दो पल मायूस होकर नहीं
खुशियों में जी लें
प्रेम का रस खुद नहीं
दूसरों को पिला लें।

जो पल कटा वो भी भला
जो पल न कटा वो भी भला
जिन्दगी की डोर किसके हाथ
ये किसी को पता न चला।

फिर यह घर कहां
ये तो मुसाफिरखाना
दो पल की जिन्दगी
सब कुछ यहीं छूट जाना।

"भारतीय समाज और महिलाएं"

अश्विनी कुमार पाण्डेय
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा), उत्तराखण्ड

महिला और पुरूष दोनो ही समाज के जरूरी अंग हैं लेकिन हमारे धर्म में तो नारी का स्थान सर्वोत्तम रखा गया है, नवरात्र हो या दुर्गा पूजा नारी सशक्तिकरण हमारे धर्म का आधार है। हमारा समाज मूलतः महिला और पुरूष दोनों के सह–सामंजस्य की ही देन है। हमारे प्राचीन समाज से लेकर आज तक महिला और पुरूष किसी गाड़ी के दो पहियों की तरह समाज को निरंतर एक गति प्रदान किये हुए हैं, इसलिए यह आवश्यक है कि महिला और पुरूष दोनो में समानता हो और दोनों के आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक अधिकार समान हों।

वैदिक समाज में महिलाओं को पुरूष के समान अधिकार प्राप्त थे, समान रूप से उन्हे शिक्षा ग्रहण करने के साथ–साथ वे सभा और समितियों में भी भाग लें सकती थीं। ऋग्वैदिक काल में लोपा, मुद्रा, मैत्रेयी, गार्गी जैसी विदुशियों की चर्चा की गयी है। उत्तर वैदिक काल से समाज में पुरूषों का वर्चस्व बढ़ गया, और समाज पुरूष प्रधान हो गया। मुगलकाल आते–2 स्त्रियों की स्थिति अत्यधिक चिंताजनक हो गयी, मुगलकाल में स्त्रियों में पर्दा प्रथा का प्रचलन हो गया।

उन्हें पुरूषों के सामने आने तक वंचित कर दिया गया तथा किसी भी प्रकार की शिक्षा एवं सुविधा का अधिकार स्त्री के पास नहीं था। ब्रिटिश काल में स्त्रियों की स्थिति में मुगलकाल की अपेक्षा कुछ सुधार जरूर हुए परन्तु उस समय भी बाल विवाह एवं सती प्रथा जैसी कुरूतियां समाज में विद्यमान थीं। स्त्रियों को अपने पति की मृत्यु के उपरांत अनिच्छा के बावजूद सती होना पड़ता था। राजा राममोहन राय के द्वारा 1828–29 में सती प्रथा के विरूद्ध अभियान चलाया गया था तथा लार्ड विलियम बेटिंक द्वारा इस प्रथा का अन्त कर दिया गया था परन्तु ऐसी कुरूतियां आज भी समाज में विद्यमान है। स्वतन्त्रता के उपरांत भी महिलाओं की सहभागिता पुरूष के समतुल्य नहीं थी, जिसके लिए अनेकों प्रयास किये गये एवं निरन्तर किये जा रहे हैं, परन्तु 21 सदीं आ जाने के उपरान्त एवं समाज के पूर्ण विकसित हो जाने के उपरान्त भी महिलाओं की स्थिति में अपेक्षाजनक सुधार नहीं हो पाया है एवं उनकी सहभागिता पुरूषों के समान नहीं है।

आज हमारें समाज में पूर्व काल की तरह महिलाओं के लिए पाबंदियां नहीं हैं, महिलाओं को भी पुरूषों के समान शिक्षा एवं समानता का अधिकार है, उन्हे आज पर्दा करने की भी आवश्यकता नहीं है, फिर भी समाज पूर्ण रूप से इन वर्जनाओं से वंचित नहीं है। वर्तमान समाज में भी महिलाओं को अनेकों प्रकार के भेदभाव एवं समस्याओं से गुजरना पड़ता है जिनमें से कुछ मूल समस्याएं भ्रूण हत्या, लिंगभेद, यौन शोषण, अशिक्षा एवं कुपोषण इत्यादि हैं। वर्तमान में भारत की कुल महिलाओं की केवल 65 प्रतिशत महिलाएं ही शिक्षित हैं

जबकि विश्व के कई अन्य देशों में महिलाओं की शिक्षा की प्रतिशतता शत प्रतिशत है। आज विश्व में भारत सबसे बड़ा लोकतन्त्र है फिर भी संसद में महिलाओं की सहभागिता केवल 10.9 प्रतिशत है। युनेस्को द्वारा 145 देशों में करायें गये लैगिंक असमानता इन्डेक्स में भारत 0.610 अंक के साथ 132 स्थान पर है। वर्तमान में भारत की महिलाओं के अस्तित्व के लिए भ्रूण हत्या एक बड़ी समस्या बनकर उभरी है जिसके चलते भारत में लिंगानुपात घटकर 940 प्रति हजार हो गया है। विगत दशक में इसमें मामूली वृद्धि अवश्य हुई है फिर भी यह चितांजनक है।

भारत के विकसित प्रदेशों पंजाब एवं हरियाणा में लिंगानुपात 900 से भी कम है जो कि वहां कि महिला विरोधी विचारधारा को प्रदर्शित करती है। विश्व में मातृ मृत्युदर में भारत का स्थान दूसरा है। आज आधुनिकता के इस दौर में भी बाल विवाह पूर्णतः बन्द नहीं हुआ है। युनिसेफ द्वारा 2009 में 20 से 24 वर्ष की महिलाओं पर किये गये एक सर्वेक्षण मे यह बात सामने आयी कि उनमें से 47 प्रतिशत महिलाओं का विवाह 18 वर्ष की उम्र के पहले ही हो गया था। विश्व में होने वाले बाल विवाह का कुल 40 प्रतिशत भारत में होता है।

एक अन्य समस्या जिसका प्रभाव केवल महिलाओं पर नहीं बल्कि समाज के चरित्र पर भी पड़ता है, वह है यौन शोषण। हमारे यहां यह कहा जाता रहा है कि 'यत्र नारी अस्तु पुज्यते, रमन्ते तत्र देवता' जहां नारी की पूजा होती है वहाँ भगवान निवास करते है, परन्तु आज के परिवेश में यह विचारधारा पूर्ण रूप से अनावश्यक लगने लगी है। यहां नारी की पूजा क्या नारी के साथ अभद्र व्यवहार किया जाता है एवं आये दिन यौन शोषण की घटनायें होती हैं। इससे प्रतीत होता है कि महिलाएं कितनी असुरक्षित हैं। महिलाएं जहां अबला से सबला बनकर हर क्षेत्र में पुरूष के साथ कन्धे से कंधा मिलाकर चलने की कोशिश कर रही हैं वहीं आज उन्हे अपने ही परिवार में योग्य स्थान नहीं मिल पाता है। महिलाओं को उनके अधिकार से वंचित किया जाना ना केवल दुर्भाग्यपूर्ण है बल्कि अशोभनीय है।

ये सभी समस्यायें अत्यन्त ही गम्भीर हैं क्योकि महिलाओं को संविधान द्वारा समानता का अधिकार प्रदान किया गया है और ऐसा अधिकार केवल शिक्षा एवं स्वावलम्बन से ही हो सकता है, अतः हमारे समाज को स्वस्थ माहौल में महिलाओं को शिक्षित एवं स्वरोजगार प्रदान किया जाना चाहिए जिससे महिलाएं अपने अधिकार एवं सम्मान की सुरक्षा कर सकें। जवाहर लाल नेहरू ने कहा था "किसी देश की स्थिति वहां की महिलाओं की स्थिति को देखकर ज्ञात की जा सकती है।'' अतः राष्ट्र को सशक्त करने के लिए यह आवश्यक है कि यहाँ कि महिलाओं की स्थिति को सशक्त किया जाए।

''जितना अध्ययन करते हैं, उतना ही हमें अपने अज्ञान का आभास होता जाता है।''— **स्वामी विवेकानंद**

"बेटी की जुबां"

अशोक सिंह चौधरी
संविदा कर्मी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

(कन्या भ्रूण हत्या, बेटी के अस्तित्व को वंश की अभिलाषा जैसी भावना क्रूर रूप लेकर बेटी के वंश पर जो अत्याचार किये जाते हैं, वो एक सभ्य समाज का स्वरूप नहीं है, इस तरह की घटनाओं के प्रति सज़ग रहने व इस अत्याचार के प्रति सकारात्मक सोच रखना ही मानवता का पुण्य व अधिकार है, माँ की भावना को केवल माँ का स्वरूप ही सम्पन्न कर सकता है व इस संसार का अस्तित्व उसकी कोख में ही पलता है, इसी शीर्ष पर आधारित कविता को बेटी की इस भावना को माँ संग प्रस्तुत किया गया है)

माँ मुझको भी, इस दुनियाँ में जीना है
तेरे आँचल की छाँव में, संग खेलना है
माँ तेरी कोख में, अस्तित्व का ये संसार है
फिर क्यों माँ, बेटी पर होता ये अत्याचार है
माँ मुझको भी संवरना है, तेरी दुनिया में
पर डरती भी हूँ आने से, इस मैली दुनियाँ में
आखिर बेटी होने का, कसूर क्या है
जो दुनिया में बेटी का अस्तित्व, इतना मजबूर है
माँ! बेटी के जन्म पर, क्यों मातम हैं मनाते
बेटियों पर होते अत्याचार, क्यों नहीं थमते
माँ तू कितनी, भोली और प्यारी है
पता है तुझको बेटी, जग से न्यारी है
माँ आखिर क्यों, बेटी से नफरत करता कोई
बेटे की चाह में, बेटी का कई
माँ बेटी की हत्या से, किसी का दुर्भाग्य न दूर होगा
जिसने जैसा कर्म किया, उसने वैसा ही है भोगा
माँ क्यों रीत ऐसी, भगवान ने बनायी होगी
लोग कहते हैं आज नहीं तो कल, तू परायी होगी
ड़रती हूँ उस रिश्ते से, खुशियां मिले जरूरी नहीं
साया तेरा उस रिश्ते में, फिर माँ मिले जरूरी नहीं
माँ मेरी दुनियां, तो तेरे आँचल में है
अभी तो उड़ना मुझको, उस आसमां में है
माँ आज बेटी हूँ , कल माँ किसी की होऊँगी
अंश बेटी के स्वरूप से, इस दुनियां को सवांरूगी
जब दुनिया में अंश बेटी का, धीरे–धीरे खत्म हो जायेगा
बिन बेटी ये वक्त, धीरे–धीरे ढ़ह जायेगा

"पुरूष की सोच"

प्रशान्त जोशी
बहुकार्य कर्मी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

देखो समाज की धारा किस दिशा में बढ़ रही।
महिलाओं के साथ रोज कैसी घटना घट रही।।
पुरूषों के अन्दर कैसी विसंगति देखो आ रही।
देखो समाज की धारा किस दिशा में बढ़ रही।।
पहले महिलाओं का जो सम्मान रहा।
वह सम्मान नित्य रोज क्यों घट रहा।।
जो इस समाज की जननी यह यहाँ।
उसे रोज पुरूष कलंकित करें यहाँ।।
इस समाज के हर घर में यहाँ।
देखो मां और बेटी भी यहाँ।।
फिर पुरूष को अहसास क्यों नही होता?
महिलाओं का सम्मान क्यों नही होता?

"दहेज कुप्रथा की शिकार बेटियाँ"

एस० एस० तोमर
कल्याण सहायक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

समय के परिवर्तन के साथ कई परम्पराएं अपना रूप खो देती हैं। वे अपनी उपादेयता को मिटाकर कुरीति के रूप से समाज के लिए अभिशाप बन जाती हैं। फलतः ऐसी प्रथाएं अपना विकृत रूप लेकर समाज के लिए एक समस्या बनकर सामने खड़ी हो जाती हैं। यहाँ तक कि उनके समाधान के लिए किये गये प्रयत्न भी असफल हो जाते हैं। हमारे देश में सभी प्रथाओं में दहेज प्रथा सबसे भयंकर व समस्या प्रधान है। आज परिस्थिति ऐसी हो गयी है कि लड़की के जन्म को एक दुर्भाग्य समझा जाता है, क्योंकि माता–पिता उसके विवाह पर होने वाले व्यय से पहले ही डरने लगते हैं। लड़की के जन्म से उन्हें दहेज का दानव सताने लगता है, इसलिए विगत युग में कहीं–कहीं कन्या बलि जैसी कुप्रथा भी प्रचलित होती थी। कन्या के जन्म होते ही बलि चढ़ाई जाती थी। आज दहेज के दानव ने लड़की वालों के दिलों में आतंक फैला दिया है।

भारतवर्ष के हर समाज में लड़की की शादी पर अधिक से अधिक व्यय करना एक सामाजिक प्रथा (मान्यता) बन चुकी है, यदि वर पक्ष से कोई मांग नहीं भी होती है, फिर भी कन्या पक्ष को अपनी शक्ति से अधिक व्यय करना एक सामाजिक आवश्यकता बन चुकी है। जो व्यक्ति इसमें कम व्यय, विवाह में सजावट की कमी या दहेज कम देता है, वह समाज में अपना अपमान समझता है; इसलिए वह सामाजिक प्रथाओं के अनुकूल व्यय करता है और सदा के लिए कर्ज में डूब जाता है।

दूसरी ओर कई समाजों में वर पक्ष की ओर से पहले ही धन, वस्तुएं आभूषण व अन्य विविध सामान की मांग की जाती है जिन्हें कन्या पक्ष को पूरा करना होता है। इस तरह की आवश्यकताएं पूर्ण न होने पर उसके दुष्परिणाम भी निकलते हैं। इस प्रकार समाज में वर की ओर से मांग करना भी एक प्रथा बन चुकी है। लड़की वाले भी पूछते हैं कि वर पक्ष की क्या मांग है और समर्थ लोग तो उसको पूरा कर देते हैं, परन्तु सामर्थ्यहीन व्यक्ति हमेशा के लिए दब जाता है अथवा रिश्ता अस्वीकार करने को मजबूर हो जाता है।

आज 21वीं सदी में दहेज प्रथा समाज के लिए विकराल रूप धारण कर चुकी है जिस व्यक्ति के पास सामाजिक रिति–रिवाजों को निभाने के लिए इच्छा शक्ति नहीं हैं और वह वर पक्ष की मांग की पूर्ति नहीं कर सकता है, तो वह अपनी कोमल सुन्दर कन्या को किसी कुरूप, अयोग्य या विधुर व्यक्ति के साथ विवाह करने के लिए मजबूर हो जाता है। जो व्यक्ति एक से अधिक विवाह करता है वह हमेशा गरीब घर की लड़की ढूँढ़ता हैं और गरीब माता–पिता अपनी लड़की की शादी करने को मजबूर हो जाते हैं, जिसके कारण लड़की आजीवन रोती रहती है। आजकल समाज में जो दहेज की मांग पूरी नहीं कर पाते वहां लड़की के ससुराल पक्ष द्वारा दहेज को लेकर उसको प्रताड़ित किया जाता है। वे अपनी बहु को मिट्टी का तेल छिड़ककर (डालकर) जला देते हैं या ताने मार–मार कर उसको प्रतिदिन यातनाएं देते रहते हैं, जिससे लडकियों का ससुराल में एक–एक क्षण काटना दूभर हो जाता है, और वे मजबूर होकर आत्महत्या जैसे कदम उठाने के लिए विवश हो जाती है, या अन्य किसी तरीके से उनकी हत्या कर देते हैं ताकि वे अपने लड़के की दूसरी शादी करके अधिक धन बटोर सकें। कई जगह पर जहां लड़की की शादी दहेज के कारण तय नहीं हो पाती है और लड़की की उम्र बढ़ने लगती है वहां पर भी लड़कियां अपने माता–पिता की समस्या को आत्महत्या करके समाधान कर देती हैं। आजकल के समय में दिन–प्रतिदिन दहेज के

दुष्परिणाम देखने को मिलते हैं। अधिकांश माता–पिता लड़की को बोझ समझते हैं। इस बात पर विचार करें कि आखिर लड़कियों को किस कारण से बोझ समझा जाता है तो उत्तर सामने आता है–दहेज की भयानकता।

दहेज प्रथा भारतीय समाज के लिए एक कलंक है, क्योंकि एक योग्य सुशील सुन्दर कन्या दहेज के कारण योग्य वर प्राप्त नहीं कर पाती है। यह भी एक सामाजिक अभिशाप है कि लड़की का जीवन एक अयोग्य, अनमेल व अनचाहे पुरूष के हाथ में चला जाता है, जिसके कारण उसका सारा जीवन दुखों व कष्टों में कटता है। भारत में इस सामाजिक बुराई की हर तरफ समाज में कटु आलोचना होती है, जिससे भारतीय समाज का सम्मानित अस्तित्व घट रहा है। आज भारत में रहने वाली हर छोटी–बड़ी जाति के लोगों में दहेज का बोल–बाला है, चाहे वह वर पक्ष की ओर से मांग को दबाव के रूप में नहीं लिया जाता है, परन्तु वह एक सामाजिक स्थान मान्यता के रूप में ग्रहण कर चुका है, जो समाज के लिए एक कलंक सिद्ध हो रहा है।

आज के दौर में हम अपने समाज को शिक्षित समाज के रूप में देखते हैं, जबकि समाज में दहेज के नाम पर बहू–बेटियों को जलाया जाता है और बदले की भावना से दहेज को लिया व दिया जाता है। यदि किसी ने अपनी बेटी के विवाह में लाखों का दहेज दिया है, तो बेटे की शादी में उससे दुगुना दहेज वसूलने की लालसा रखते हैं। इस तरह बदले की परम्पराएँ प्रचलित हैं, जो हमारे शिक्षित समाज में आज भी हीन–भावना को दर्शाता है।

आधुनिक युग में शिक्षा का काफी प्रचार–प्रसार हुआ है। प्रत्येक शिक्षित नवयुवक व नवयुवती दहेज के दानव से भली भाँति परिचित हैं, इसलिए उन्हें इस बन्धन से मुक्त होने के लिए ऊपर उठकर संघर्ष और साहस दिखाने की जरूरत है, बल्कि समाज में आज कल ऐसे कई उदाहरण सामने आए हैं। कई बार तो यह देखा गया है कि लड़की ने लड़के वालों को दहेज मांगने पर मंडप में दुल्हे को बारात सहित वापस खाली हाथ लौटा दिया। कहीं पर लड़के वालों ने लड़की के रिश्ते के समय माता–पिता से अधिक दहेज की मांग करने पर लड़की ने रिश्ता करने से मना कर दिया। आजकल पढ़ी–लिखी लड़कियां अनचाहे, बेमेल व अयोग्य वर से शादी करने के बजाय आजीवन कुंवारी रहकर जीवन यापन करना पसन्द करती हैं, इसलिए वे नौकरी आदि से अपनी आजीविका कमाती हैं और आज सरकार ने संसद में दहेज विधेयक पास कर दहेज देने व लेने पर प्रतिबन्ध लगा दिया है, जिसका कठोरता से पालन करवाना भी सरकार का काम है। जो लोग दहेज के नाम पर लड़की को परेशान करते हैं, उन्हें दण्डित करना चाहिये। आज का युवक विक्रय की वस्तु बन चुका है, उसको कोई भी धनी व्यक्ति खरीद सकता है इसलिए वह समाज के सामने उदाहरण पेश कर दहेज के दानव को कुचल देना चाहते हैं। कुछ सामाजिक संस्थाओं को भी दहेज लेने वाले व्यक्तियों का सामाजिक बहिष्कार करना चाहिए।

जब तक समाज के सच्चे हितैषी लोग सामने नहीं आते तब तक कानून बनाने से कोई लाभ नहीं होगा। यदि युवा समाज स्वयं इस कुरीति को मिटाने का प्रयास करें, तो शीघ्र ही सफलता मिलने की संभावना बन सकती है। सर्वप्रथम माता–पिता को आगे आकर दृढ़ निश्चय करना होगा कि हमसे जो लोग दहेज के लालच व लेन–देन में रिश्ता जोड़ने की बात करेंगें, उन लोगों के साथ अपनी लड़की का नाता–रिश्ता नहीं जोडेंगें, चाहे लड़की सदा घर पर कुवांरी ही क्यों न बैठी रहे। लड़की को भी इस बात पर अपने माता–पिता का समर्थन करना चाहिये, परन्तु माता–पिता को भावुकता व समाज के डर की परवाह किये बिना ऊपर उठना होगा और इस लड़ाई को आगे आकर स्वयं लड़ना होगा। जब दहेज लोभियों को प्रत्येक स्थान से धन देने व रिश्ते जोड़ने से नकारा जाएगा तो लड़के वालों को दहेज जैसी मांग को छोड़कर सच्चे रिश्ते के लिए एक न एक दिन झुकना ही पड़ेगा। (बल्कि आज के पढ़े–लिखे नवयुवक व नवयुवतियों तथा माता–पिता को पहाड़ी क्षेत्र ''जौनसार बाबर'' देहरादून से सीख लेनी चाहिए, जहाँ आज भी प्रेम बन्धन के पवित्र सूत्र में बन्धने के लिए मात्र एक रूपये में रिश्ते जुड़ जाते हैं)।

भारतवर्ष में प्रत्येक समाज में लड़कों को पारिवारिक पौरूष माना गया है, जिसको (बलिष्ठ) बहादुरी एवं साहस के नाते सम्मान की दृष्टि के साथ देखा जाता था, जो समाज में अपने बलबूते पर या परिवार के साथ अपने माता–पिता की आजीवन सेवा तथा हक के लिए लड़ता था और स्त्री की कमाई पर नजर न रखना, चोरी व किसी की वस्तु पर लालच की नजर से देखना भी पाप समझता था, परन्तु आज दहेज के लालच ने नवयुवकों के मन में कुछ न कुछ कर दिखाने के साहस व अपने अन्दर के मन को मार दिया है, जिसके लिए वह चोरी तथा नशे की वारदातों को भी अंजाम देता है। ताउम्र वह अपने आपको खाली महसूस करता है और लड़की की कमाई पर लालच रखकर ऐशो आराम की जिन्दगी गुजर बसर करना चाहता है, जिसमें उसका परिवार भी सम्मिलित होता है, जिसके कारण समाज में कायरता की मिसाल व कुप्रथा का प्रचलन और अधिक बढ़ गया है। इसलिए विशेषकर पढ़ी लिखी लड़कियों को हिम्मत दिखाते हुए अपने माता–पिता के साथ मिलकर इस कुप्रथा को जड़ से उखाड़ फेकने का साहस व संकल्प लेना चाहिए।

"बचपन की बरसात"

इफ्तेखार अहमद
सहायक लेखाधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

याद आती है मुझे बचपन की बरसात
वह शरारत से भरी बचपन की बरसात।
घर के बाहर भरे पानी में
नाव बनाकर चलाना भरे पानी में।
बारम्बार अपने कपड़े और जूते भिगोना
किताबें और स्कूल का बस्ता भिगोना।
जुगनुओं को पकड़ना और उड़ाना
चमकती बिजली को आँखे दिखाना।
झूले झूल–झूल कर सबको हैरान करना
ज्यादा भीग भीग कर सबको परेशान करना।
माँ का डाँटना और फिर से मनाना
गले लगाकर मुझे कड़वा काढ़ा पिलाना।
यह यादें बचपन की बरसात की थीं
गुजरे जमाने के हालात की थीं।
जब प्रकृति से किसी का खिलवाड़ नहीं होता था
माहौल से किसी का बिगाड़ नहीं होता था।
अब तो बादल भी दिखते हैं तो डर जाता हूँ
किसी अनहोनी की आशंका से सिहर जाता हूँ।

हिमाद्रि तुंग शृंग से प्रबद्ध शुद्ध भारती
स्वयं प्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती
'अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़-प्रतिज्ञा सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पंथ, बढ़े चलो, बढ़े चलो!'
-जयशंकर प्रसाद

छायाकार - आर0 एस0 नेगी, लेखाधिकारी

धारी देवी मंदिर-श्रीनगर (पौड़ी)
छायाकार - आर0 एस0 नेगी, लेखाधिकारी

गंगोलीहाट (पिथौरागढ़)
छायाकार - गणेश प्रसाद, सहायक लेखाधिकारी

"हुक्का"

सुशील देवली
सहायक लेखाधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

गाँव की चौपाल देखो सुन्न है।
चौपाल पर बैठा हुक्का कैसा खिन्न है।।
धड़कनें उसकी कोई गुड़गुड़ाता नहीं।
साथ बैठ उसको कोई बड़बड़ाता नहीं।।
बाहें फैलाये बैठा है, वो भी इंतजार में।
कोई तो कभी आयेगा उसकी कतार में।।
घरों के आँगनों में अब लोग नहीं मिलते।
पहले की माफिक अब पड़ोसी भी नहीं खिलते।।
शहरों की वो गलियां भी अब बदल गयी हैं।
नजदीक थी जो दूरी मीलों में बदल गयी हैं।।
होली के छीटें भी अब चटक नहीं खिलते।
ईद पर भी ऐ दोस्त तुम गले दिल से नहीं मिलते।।
निगाहों के घेरे भी बंद होने लगे हैं।
आवाजों के दायरे भी तंग होने लगे हैं।।
घर भी अब पहले की तरह नहीं बोलते।
दिल के दरवाजे तुम उसी मुहब्बत से नहीं खोलते।।
ज्यादा नहीं कुछ रोज पहले की ही तो बात है।
कुछ पुराने दिनों के ख्यालों से मेरी मुलाकात है।।
मेरी आँखो ने देखा था लोगों को प्यार से मिलते।
हिन्दू के मुहल्ले में रमजान को खिलते।।
होली के रंगों में भी तब कुछ खास करम था।
वो हिन्दु था या मुस्लिम इसका भी भरम था।।
ना था कोई नापाक कोई था ना मवाली।
रौशन थी साथ ईद मनती थी दीवाली।।
रहते थे सब साथ रहते थे सब हिल–मिल।
सद्भावना ऐसी थी कि अशफाक हो या बिस्मिल।।
किसकी लगी नजर के सब जार जार है।
चौपाल का वो हुक्का आज भी बेजार है।।
बैठा है वो चौपाल पर इसी इंतजार में।
कोई तो शख्स आयेगा उसकी कतार में।।
हुक्के की धड़कनों में भी एक मेलभाव था।
बेशक थे लोग अनपढ़ पर प्रेमभाव था।।

"सरहद की पुकार"

अरविन्द कुमार उपाध्याय
लेखा परीक्षक
कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा), उत्तराखण्ड

मैं वापस आ रहा था,
ममता, स्नेह और प्रेम की बारिश में नहाकर
गाड़ी की गति बढ़ती जा रही थी।
अनोखी बारिश के बूँदों की याद आ रही थी।
मेरे प्रियजन, मेरा घर, मेरा गाँव छूटा जा रहा था,
मन का तार और आँसूओं का बाँध टूटा जा रहा था।
एक तरफ माँ की ममता, स्नेह और अश्कों से भरी आँख थी।

दूसरी तरफ देश की आन और साख थी।
पत्नी ने हँसते हुए विदा करने की ठानी थी
पर अश्कों ने कहाँ किसी की मानी थी।
दिल के गमों को दबाते हुए
हँसी होठों पर सजाते हुए,
उसने पूछा कब तक आओगे,
मैंने कहा जब भी याद करोगी ख्वाबों में आ जाऊँगा,
मगर रोयी तो आँसू बनकर वापस चला जाऊँगा।
अपनों की सूरत, माँ भारती की मूरत हमारी ताकत है
देश की एक पुकार पर लहू बहाना हमारी आदत है
मिट्टी का कर्ज चुकाना, फर्ज हमारा है
देश की सरहद ने हमें आज फिर पुकारा है
बच्चों से किया झूठा वादा याद आ रहा था
क्योंकि मैं वापस आ नहीं, वापस जा रहा था।
बिछड़ने का गम और वादा टूटने का डर सता रहा था
लेकिन एक वादा पूरा होता नजर आ रहा था
मैं देश की पुकार पर सरहद वापस आ रहा था
मैं देश की पुकार पर सरहद वापस आ रहा था।

"पश्चाताप"

रामबीर सिंह
वरिष्ठ लेखाधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

आज से दो शताब्दी पूर्व एक रियासत में महाराजा दीनदयाल का शासन था। वह अपने नाम के अनुसार अपनी प्रजा के प्रति बड़ा स्नेह रखते थे और उनके परिवार के दुःख–सुख व कठिनाइयों को प्रत्येक माह के अन्तिम दिन दरबार लगाकर सुनते थे तथा उनका गहन विचारोपरान्त सहानुभूतिपूर्वक हल निकालते थे। इतने दयालू स्वभाव के थे कि दूर–दूर तक की रियासतों में उनके चरित्र, सोच, बुद्धि एवं तथ्यपरक न्याय व दयालुता के किस्से प्रसिद्ध थे। उनके शासन में प्रजा सुख–समृद्धि की ओर अग्रसर थी। अचानक एक रात हृदय घात से उनके प्राण पखेरू उड़ गये तो प्रजा अपने को असहाय व अनाथ शिशु की तरह महसूस करने लगी। चूंकि राज सिंहासन पर किसी को विद्यमान होना अनिवार्य था। अतः समस्त मंत्रीगणों, प्रजा के विशिष्ट महानुभावों एवं धार्मिक/राजनैतिक पंडितों से विचार–विमर्श उपरान्त दिवंगत राजा की पत्नी को राज सिंहासन पर आरूण करा दिया। रानी बड़ी बुद्धि मान पढ़ी लिखी उच्च कुल से थी, लेकिन धीरे–धीरे वह सत्ता के इर्द–गिर्द मंडराते चाटुकारों व दलालों के मकड़–जाल में फंसती चली गई।

एक बार बाग में कार्यरत माली से रानी के महल का एक मिट्टी का गमला टूट गया। रानी को जैसे ही सूचना मिली, उसने तथाकथित परामर्शदाताओं से विचार करके माली को फांसी पर लटकाने और दूसरा माली नियुक्त करने का फरमान सुना दिया। कुछ दिनों पश्चात् दूसरे माली से भी गमलों की साफ–सफाई, खाद्य–पानी देते समय एक गमला टूट गया। रानी ने तुरंत उसे भी फांसी पर लटकवा दिया और नया माली नियुक्त कर लिया। इसी तरह एक वर्ष में चार गमले टूट गये और चारों मालियों को फांसी दे दी गई। रानी के इस तरह निरीह मालियों को फांसी चढ़ा देने से प्रजा में बड़ा रोष था तथा राज्य के विद्वान परेशान थे, लेकिन रानी को समझाने का किसी के पास भी उपाय नहीं था।

इसी दौरान राज्य की सीमा में एक साधारण साधु की वेश–भूषा में एक महात्मा ने प्रवेश किया तो देखा कि राज्य में चारों ओर निराशा व असन्तोष व्याप्त है। उन्होंने प्रजा से विस्तार से सारा वृतान्त पूछा और तुरंत रानी के महल की शोभा बढ़ा रहे सभी शेष 24 गमलों को तोड़ कर फेंक दिया। इस घटना को सभी दरवानों ने देखा और तुरंत रानी को सूचना दी। सूचना सुनकर रानी आग–बबूला होती हुई दल–बल के साथ महल के दरवाजे पर आई और देखा कि वह साधू वेशधारी महात्मा सीढ़ियों पर शान से बैठा

है। रानी ने क्रोध से उस साधू को काफी अपशब्द सुनाये और कैदखाने में डालने की धमकी दी। महात्मा धैर्य–पूर्वक रानी की बातों को सुन रहा था।

जब रानी का क्रोध पूर्ण रूप से शान्त हो गया तो उस तेजस्वी महात्मा ने रानी से बड़े ही विनम्र शब्दों में कहा कि मैंने आपके महल के गमलों को जानबूझकर तोड़ा है और मैंने इन गमलों को तोड़कर शेष सभी 24 मालियों के जीवन की रक्षा की है। जिसे मैं अपना निस्वार्थ कर्त्तव्य समझता हूं। आप चाहें तो मुझे फांसी पर चढ़ा सकती हैं। साधु के इस दुस्साहस पर रानी का मुख–मण्डल क्रोध से तिलमिला उठा। रानी ने अपने मंत्री को आदेश दिया कि इस साधु को तुरंत दरबार में पेश किया जाय।

दरबार में साधु को पेश किया गया और उससे प्रश्न किया कि वह कौन है, क्या नाम है, और उसकी हिम्मत कैसे हुई महल के सभी गमलों को तोड़ने की। इस प्रश्न का उत्तर देने से पहले उस साधू ने भरे दरबार में सभी के समक्ष पूछा कि मैं आप सभी मंत्रीगणों, विशिष्ट व्यक्तियों, विद्वानों यहाँ तक कि महारानी से यह जानना चाहता हूँ कि आप में से कोई भी ऐसा व्यक्ति बतायें जिसने अपने पद पर कार्य करते हुए कभी भी कोई त्रुटि न की हो। साधु के पलटवार प्रश्न से रानी के तथाकथित परामर्शदाता, चाटुकर अचम्भित व स्तब्ध थे। साधु ने विनम्रता से कहना जारी रखा। महारानी द्वारा यदि मातहतों को उनकी मेहनत, लगन व नियमों का अनुपालन करते हुए कर्त्तव्य परायणता को मान–सम्मान, प्रोत्साहन नहीं दिया जायेगा, तो उनका मनोबल टूटेगा। कर्त्तव्यों के प्रति उदासीनता पैदा हो जायेगी। वह मानसिक रूप से हतोत्साहित हो जायेंगे। अतः प्रजा का कोई भी व्यक्ति चाहे वह महिला हो अथवा पुरूष, राजा को सदैव उन्हें डाटने, तुच्छ समझने, उन्हें दुत्कारने, नीचा दिखाने से परहेज करना चाहिए। इसके विपरित उन्हें उनकी गलतियों को सुधारने, पुनः त्रुटि न दोहराने हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि उन्हें अपने कार्य को सुधारने, उत्कृष्ट रूप से करने की प्रेरणा मिले। देश, समाज, दुनिया अथवा किसी भी धर्म–जाति, उच्च–निम्न वर्ग में ऐसा कोई इन्सान पैदा नहीं हुआ, जो अपने कर्त्तव्य पूर्ति की अवधि में त्रुटि नहीं करता हो। त्रुटि–भूल वही करेगा जो कर्त्तव्य करता है। आपने बिना सोचे–समझे एक गमला टूटने पर चार मालियों को फांसी पर चढ़ा दिया जो घृणित कृत्य था, क्योंकि जिस इन्सान को आपने जन्म नहीं दिया उसे मारने का हक भी आप को कदापि नहीं है। आप को तो अपने विवेक से न्याय–अन्याय को सुनिश्चित करके निर्णय लेना चाहिए।

साधु के मुख–मण्डल पर तेज और विनम्रता देख रानी इतनी प्रभावित हुई कि उसने महात्मा के चरण पकड़ लिये और खुद को माफ़ करने की विनती के साथ कहा कि महात्मा आपने मेरी आँखे खोल दी। आपको कोटि–कोटि धन्यवाद! मैं आपको वचन देती हूँ कि आज के बाद अपनी प्रजा को कोई कष्ट नहीं होने दूंगी और अपने स्वर्गवासी पति की भाँति अपना कर्त्तव्य निभाऊंगी। आप कृपया अपना परिचय दें। साधू ने बताया मेरा नाम ऋषभ देव है। आपके स्वर्गीय पति मेरे परम् शिष्य थे। इतना कहकर महात्मा अपने गन्तव्य स्थान को चले गये। महात्मा ऋषभ देव की बातों का रानी के मन–मस्तिष्क पर इतना प्रभाव पड़ा कि उसने साधु को दिये वचन का अक्षरशः पालन किया और अपने राज्य की ख्याति को अपने स्वर्गीय राजा दयाल की प्रसिद्धि तक के शिखर तक ले गई।

"क्रोध को पाले रखना गर्म कोयले को किसी और पर फेंकने की नीयत से पकड़े रहने के सामान है इसमें आप ही जलते हैं।" **– भगवान गौतम बुद्ध**

"चश्मा"

सुशील देवली
सहायक लेखाधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

अब ना दूर का ना पास का दिखायी पड़ता है।
चश्मा तजुर्बेदार हो तो सब कुछ साफ दिखायी पड़ता है।।

रंगीन चश्में सही रंग दिखायें ये जरूरी नहीं।
जो रंग चढ़ाओ आँखों पे आदमी उस रंग में दिखायी पड़ता है।।

ये चश्मों की दुनिया है बरखुरदार एक बार तो आजमाओ।
नालायक गर इसे पहन ले तो वो भी लायक दिखायी पड़ता है।।

कीमती चश्मों में कहां होती है समझ मंहगाई के इल्मों अहसास की।
गरीब भूखे चूल्हों में उड़ता धुआँ कभी–कभी दिखायी पड़ता है।।

"समाज की दुर्दशा"

प्रशान्त जोशी
बहुकार्य कर्मी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

यह समाज किस दिशा में जा रहा हैं।
गरीब और गरीब होता जा रहा है।।
अमीर नित्य नयी ऊँचाइयों को छूता है।
दोनों के बीच का यह अन्तर और गहरा रहा है।।
अमीरों के अन्दर पाश्चात्य संस्कृति और बढ़ती जा रही।
इससे गरीबों की दशा और बिगडती जा रही।।
इन्सान अब इन्सान कहाँ रह गया है।
वह तो समाज में जानवर सा हो गया है।।
कुछ के अन्दर अभी इन्सानियत बची हुई।
बाकियों की देखो खोती जा रही।।
अमीर और गरीब के बीच की यह दूरियाँ।
भ्रष्टाचार की तरह रोज विकराल रूप लेती जा रहीं।।

साँप!
तुम सभ्य तो हुए नहीं
नगर में बसना भी तुम्हें नहीं आया।
एक बात पूछूँ - (उत्तर दोगे?)
तब कैसे सीखा डँसना--
विष कहाँ पाया?
- अज्ञेय

छायाकार - सुनील कौल, वरिष्ठ लेखाकार

हनुमान मन्दिर-औली (चमोली)
छायाकार - आर0 एस0 नेगी, लेखाधिकारी

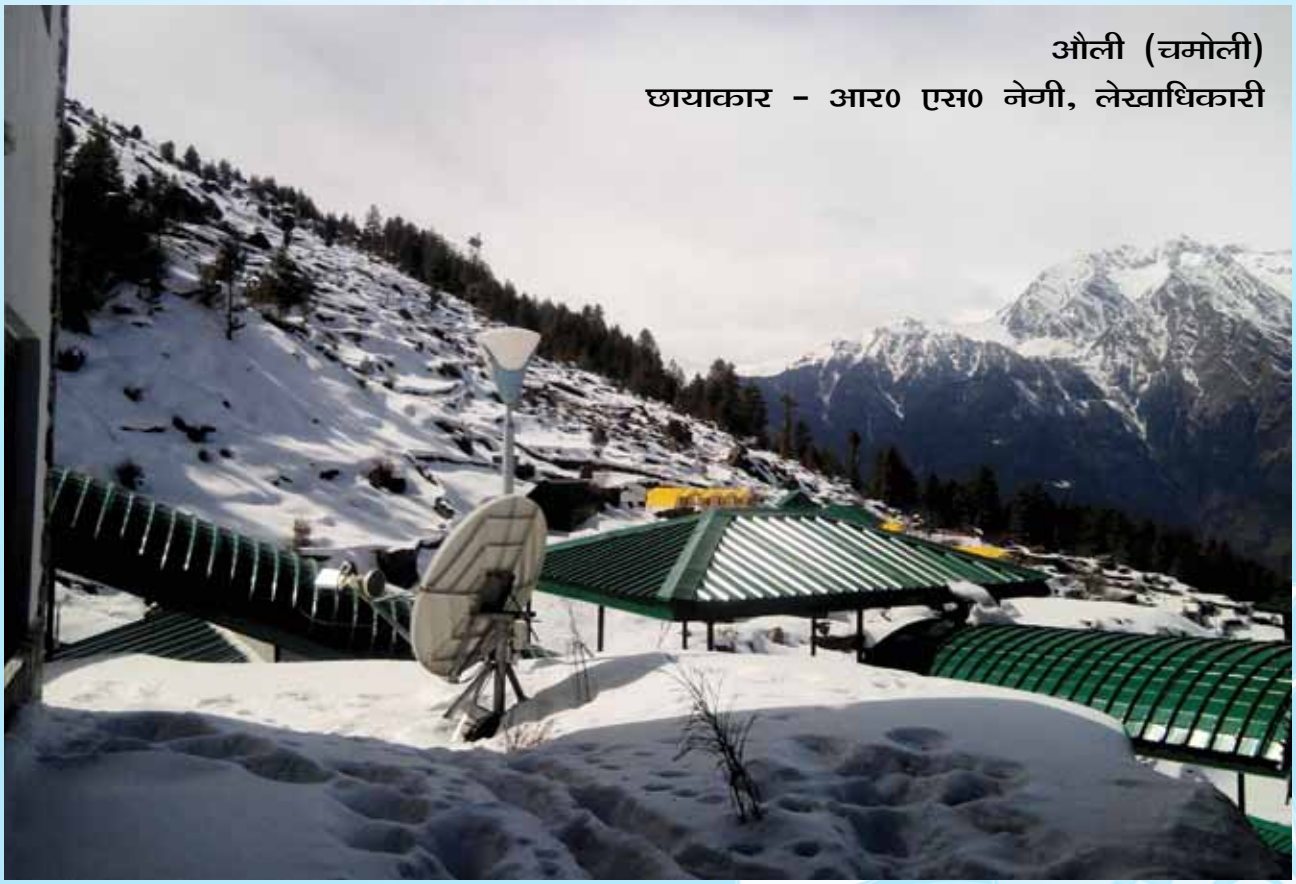

औली (चमोली)
छायाकार - आर0 एस0 नेगी, लेखाधिकारी

"नया युग जो आ गया"

अशोक सिंह चौधरी
संविदा कर्मी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

चरित्र गया, स्नेह गया,
जैसे बिक गया यह संसार
ज्यों हीं धन–दौलत का आनन्द मिला,
बिक गया प्रेम व्यवहार

चिट्ठी लिखा संदेश
मोबाईल संदेश में बदल गया
मिठास भरी बातों का असर
मोबाइल युग ने छीन लिया

ये अंग्रेजी जमाना है
रिश्तों का नाता बदल गया
माँ बन गयी है मोम
और पिता भी डैडी हो गया

सास बहू के रिश्तों को
सिरियलों ने छलावा दिया
घूंघट ओढ़े रिश्तों को
फिल्मीं फैशन ने बिगाड़ दिया

अपना देश छोड़ के
पराया देश प्यारा हो गया
धन–दौलत की इस भीड़ में
विदेशी वीजा मिल गया

त्यौहारों के इस देश में
वैलेन्टाइन डे जो आ गया
प्रेम की शाख पर
विदेशी कबूतर बैठ गया

गूगल की जैसी सोच हो गयी
फेसबुक सा फेस हो गया
इन आदतों के फेर में
समय–सार ढेर हो गया

"समाज का नैतिक पतन"

महावीर सिंह रावत
सहायक लेखाधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में लिखा है–

बाढे खल बहु चोर जुआरा। जे लंपट परधन परदारा।।
मानहिं मातु पिता नहि देवा। साधुन्ह सन करवावहिं सेवा।।
जिन्ह के यह आचरण भवानी। ते जाने हु निसिचर सब प्रानी।।
अतिसय देखि धर्म कै ग्लानि। परम समीत धरा अकुलानी।।

महाकवि तुलसीदास जी ने यह वाणी तब अपनी लेखनी से लिपिबद्ध की थी, जब उस समय समाज में, आज के समाज की तरह बुराइयां नगण्य थीं। यह उनकी दूरदृष्टि का परिणाम था कि उन्होंने उस काल में यह सब देख लिया था कि ऐसा समय भी आयेगा जब समाज में मक्कारों, चोरों, जुआरियों परधन हड़पने वालों तथा परस्त्री पर नजर रखने वाले लोगों का बोलबाला होगा। माता–पिता को देव तुल्य न समझ कर उन्हें बोझ समझा जायेगा तथा सज्जन पुरूषों का अपमान किया जायेगा। आगे तुलसीदास जी कहते हैं कि भगवान आशुतोष पार्वती जी से कहते हैं, 'हे देवी ! जब ऐसे आचरण के लोग धरा पर पैदा होने लगे तो यह समझ लो कि धरा पर निशाचरों का आधिपत्य हो गया है। ये निशाचर प्रवृत्ति के लोग मानव के भेष में दानव होते हैं, ऐसे दानवों के पैदा होने से समाज में नैतिकता का पतन हो जाता है, जिससे मानव जाति को बहुत बड़ी क्षति होती है। इन निशाचरों से पूरा समाज यहां तक कि यह सारी पृथ्वी व्याकुल हो उठती है।'

आज भी हम लोगों में से बहुत से लोग भली–भाँति जानते हैं कि कुछ दशक पूर्व भारत के गाँवों में लोग अपने घरों में ताला नहीं लगाते थे क्योंकि उन्हें घर में चोरी होने का डर नहीं रहता था। लोग ईमानदार थे, ईमानदारी समाज का गहना हुआ करता था। कोई मक्कारी करने की हिम्मत नहीं कर सकता था, अगर किसी ने मक्कारी करने की कोशिश की तो वह समाज में मुँह दिखाने लायक नहीं रहता था, जब मक्कारी करने वाले को अपनी गलती का अहसास होता तो वह समाज से माफी मांग लेता था।

जब घरों में ताला ही नहीं लगता था तो इससे स्पष्ट हो जाता है कि पराये धन व परस्त्री पर कोई निगाह नहीं रखता था। पराया धन चुराना पाप समझा जाता था उसे छुआ तक नहीं जाता था। परायी बहू–बेटियों को अपनों जैसा सम्मान दिया जाता था, उनकी तरफ देखना भी गुनाह माना जाता था। संयुक्त परिवार प्रथा में दादा–दादी माता–पिता, ताया–ताई व चाचा–चाची के सायें में बच्चों को सामाजिक संरचना के सम्बन्ध में बहुत कुछ सीखने को मिलता था, जिसके कारण आगे चलकर वे समाज के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। बूढ़े माँ–बाप को देव तुल्य समझा जाता था, उनकी आज्ञा परिवार के सदस्य को सदैव शिरोधार्य थी। उनकी बात

अनसुनी नहीं की जाती थी। सज्जन पुरूषों की समाज में बहुत इज्जत होती थी, उनकी कही बात को भगवान की वाणी माना जाता था।

आज समाज में अनेक बुराइयों ने जन्म ले लिया है। हर तरफ मक्कारों की फौज खड़ी मिलेगी, जो अपनी मक्कारी की बदौलत हर दिन गिरगिट की तरह रंग बदलते रहते हैं। इस प्रवृति के लोग अपना उल्लू सीधा करना अच्छी तरह जानते हैं। चोरों पर किसी का नियंत्रण न रहा, वे आँख झपकते ही हाथ साफ कर देते हैं। घरों में कितने भी ताले लगा लो, घर से बाहर निकलते ही सारे ताले वासुदेव व माँ देवकी की बेड़ियों की तरह खुल जाते है। जुआरियों की अपनी अलग ही दुनियाँ है इनकी करतूतों से घर की माली हालत चौपट हो जाती है। बीबी–बच्चे अनाज के दाने–दाने के लिए मोहताज हो जाते हैं। पराया धन हड़पने के रूप में एक नया स्वरूप सामने आया है, जिसे आज के युग में भ्रष्टाचार कहते हैं। भ्रष्टाचार रूपी दानव हर वर्ग के लोगों का शोषण कर रहा है। अथक प्रयासों के बावजूद भी इस दानव से पीछा छुड़ाना असम्भव हो गया है, जिसके कारण आम नागरिक अपने आपको ठगा हुआ महसूस कर रहा है।

आज समाज में महिलाओं को कितना सम्मान प्राप्त है। इसका व्याख्यान हर दिन प्रिन्ट मीडिया एवं इलैक्ट्रानिक मीडिया से हर कोई प्राप्त कर रहा है। किस प्रकार से युवतियों एवं अबोध बालिकाओं को सामूहिक दुष्कर्म का शिकार बनाया जा रहा है। निशाचर प्रवृति के लोग भूखे भेड़ियों की तरह किस प्रकार टूट पड़ते है ये किसी से छिपा नहीं है। समाज में दहेज लोभी भेड़िये नयी–नवेली दुल्हनों को आग के हवाले कर रहे हैं, उन्हें घुट–घुटकर जीने को मजबूर कर रहे हैं। किस प्रकार से बेटी को दुनियाँ में आने से पहले माँ के गर्भ में ही गहरी नींद सुला दिया जाता है, ये महिलाओं पर किया जाने वाला घोर अत्याचार है। इन कृत्यों से मानवता का सिर शर्म से झुक जाता है।

आज संयुक्त परिवार प्रथा का प्रचलन खत्म हो चुका है। हर युवा एकांकी जीवन यापन करना चाहता है। हर किसी को अपने बच्चों के भविष्य की चिन्ता सता रही है, जिसके कारण बूढ़े माँ–बाप असहाय हो रहे हैं। बूढ़े माँ–बाप को आज की युवा पीढ़ी बोझ समझती है तथा उनको अपने साथ रखना पसंद नहीं करती है। कभी–कभी ऐसी परिस्थितियां पैदा हो जाती हैं, जब बूढ़े माँ–बाप वृद्धाश्रम की शरण लेते हैं। कितनी शर्म की बात है जिन माँ–बाप ने हमें दुनिया दिखाई, दुनिया से लड़कर आगे बढ़ने का हौसला दिया, जब माँ–बाप बूढ़े हो जाते हैं तो हम उन्हें भूल जाते हैं। साधु–संतो व सज्जन पुरूषों की आज की दुनिया में कोई कद्र नहीं है। उन्हें लकीर का फकीर कहकर सम्बोधित किया जाता है। आज उनकी वाणी का कोई कद्रदान नहीं है। वाणी उन्हीं की सुनी जाती है, जिन्होंने वाणी को व्यापार बना लिया हो।

समाज में कुछ दानवी प्रकृति के लोग सामाजिक समरसता में जहर घोलने का कृत्य कर रहे हैं, जिससे सामाजिक ताने–बाने में खलल पैदा होता है। ये अपने मकसद में कामयाब होकर खून–खराबा, लूटपाट, बलात्कार, भ्रष्टाचार को बढ़ावा देते हैं, जिससे मानव समाज व्याकुल हो उठा है, जिसके कारण एक घोर निराशा के दलदल में समाज धंसता जा रहा है। इस घोर निराशा से बाहर निकलने का रास्ता नहीं सूझ रहा है। प्रत्येक स्तर पर नैतिकता का ह्रास हुआ है। अगर कोई समाज के उत्थान की बात करता है तो उसकी बातों को अनसुना किया जाता है।

आज हम ये उम्मीद करें कि फिर से भगवान राम इस धरा पर अवतरित होकर असमाजिक तत्वों का नाश कर रामराज्य की स्थापना करेंगे, यह सम्भव नहीं है। यह आम जनता का नैतिक दायित्व है कि हर स्तर पर ऐसे असमाजिक तत्वों का घोर विरोध करें। नैतिकता का पाठ बचपन से ही अपने बच्चों को पढ़ायें, समाज की हर अच्छाई–बुराई का ज्ञान उन्हें करायें तथा उन्हें संस्कारवान बनाएं, इसके साथ ही साथ समाज के प्रबुद्ध नागरिकों को हर अनाचार के विरूद्ध आवाज उठानी चाहिए, जिससे समाज में एक नई चेतना जागृत हो और दानवी प्रवृत्तियों का समाज से समूल नाश हो सके।

मैं पूर्ण विश्वास के साथ कह सकता हूं कि यदि हम सब चारित्रिक उत्थान कर सकें तो इसमें कोई दो राय नहीं है कि हम फिर से रामराज्य की ओर अग्रसारित होंगे।

"ज्ञानी वह है, जो वर्तमान को ठीक प्रकार समझे, और परिस्थिति के अनुसार आचरण करे" **–विनोबा भावे**

"आज का आइना"

रामबीर सिंह
वरिष्ठ लेखाधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

दिन के उजाले में खौफ़ का मंज़र
भरोसा था, जिन्दगी पार लगाने का जिस पर
उसी ने घोंपा पीठ में खंज़र।
था कसूर इतना,
पाला–पोसा, पढ़ाया–लिखाया,
अपने पैरों पर खड़ा होना सिखाया
किस्मत ऐसी, उसी से धोखा खाया।
धोखा खाकर भी
दुआएँ देती है आत्मा,
क्या पता था,
करेगा यही जिन्दगी का खात्मा।
भरोसा इतना, ईश्वर में जितना
सभी ने पूछा
बदले में पाया कितना।
यही सोचता रहा
नदी
सभी को देती है जिन्दगी
खुद पानी पीती है कितना।

"मानव–मन की अद्भुत शक्तियाँ"

एस०जे० राय चौधरी
वरिष्ठ लेखाकार
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

क्या कभी आपने सोचा है कि एक व्यक्ति, बहुत ही कम प्रयास कर, प्रसन्न, समृद्ध तथा परिपूर्ण होता है। परन्तु एक अन्य व्यक्ति कड़ी मेहनत के बावजूद अकथ्य कठिनाइयों का सामना करता है। इस प्रश्न का उत्तर मानव मन के कामकाज की प्रक्रिया में उपलब्ध है।

मानव मन के दो अलग तथा कार्यात्मक भाग हैं। दोनों भागों के अपने विशिष्ट गुण तथा शक्तियाँ हैं। इन्हें हम चेतन मन तथा अवचेतन मन के नाम से जानते है। चेतन मन तर्कसंगत भाग है। यह सत्य तथा असत्य के बीच अंतर कर सकता है। परन्तु अवचेतन मन, तर्क नहीं कर सकता है, किसी भी विचार या सुझाव को बिना अंतर किये, उस पर अमल करना शुरू करता है। चेतन मन विचार या सुझाव रूपी बीज अवचेतन मन में बोता है। अगर चेतन मन सुख–समृद्धि तथा शांति के बीज बोता है तो अवचेतन मन एक रचनात्मक तथा सामंजस्यपूर्ण जीवन प्रदान करता है। अतः भाग्य को बदलने के लिए विचारों को बदलना जरूरी है। बाह्य परिस्थितियों को बदलने के बजाय, कारण को बदलना होगा।

कोई विचार या सुझाव अपने आप में शक्तिशाली नहीं होता। परन्तु जैसा कि सम्मोहन शक्ति द्वारा सिद्ध हुआ है, सुझाव की शक्ति, अवचेतन मन द्वारा उस विचार या सुझाव को स्वीकार करने पर ही उत्पन्न होता है। अवचेतन मन पर किसी सुझाव या विचार प्रभावित होने पर आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त होते हैं। यह सत्य युगों से महान पुरूषों द्वारा घोषित किया गया है। परन्तु अवचेतन मन पर किसी सुझाव को प्रभावित कैसे करें, यह अहम प्रश्न है।

विज़्यूलाईजेशन :– अवचेतन मन पर किसी विचार को प्रभावित करने का सहज एवं प्रभावी तरीका विज़्यूलाईजेशन है। अर्थात मन की आँखों से इस विचार को एक चित्र के रूप में उज्जवल तथा ज्वलंत रूप से कल्पना करना।

भौतिक आँखों से हम बाह्य संसार को देखते हैं, परन्तु मन की आँखों से हम किसी भी दृश्य की कल्पना कर सकते हैं। प्राचीन ग्रीस में विज़्यूलाईजेशन द्वारा स्मरण–शक्ति की वृद्धि, जिसे निमोनिक्स

कहते हैं, में काफी महत्वपूर्ण सफलता हासिल की गयी, जो आज भी हैरी लोरेन, विश्वरूप राय चौधरी तथा अन्य शिक्षकों द्वारा सिखायी जाती है।

विज़्यूलाईजेशन तकनीक द्वारा ध्यानः– मस्तिष्क की कोशिकायें, जिसे न्यरान कहते हैं, में एक दूसरे से संवाद करने हेतु बिजली का उपयोग करते हैं। मूल रूप से इन बिजली तरंगों के चार स्तर होते हैं– बीटा (सजग) अल्फा (हल्की निद्रा) थीटा (निद्रा) तथा डेल्टा (गहरी निद्रा)। एक व्यक्ति इस क्षण क्या कर रहा है। इस आधार पर इन बिजली तरंगो के गतिविधि में परिवर्तन होता है। युगों से, अधिकतम रचनात्मक कार्य तथा अविष्कार अल्फा तथा थीटा स्तर में ही सम्पन्न हुए हैं। अल्फा या थीटा स्तर में सतर्क रहकर प्रवेश करना तथा उस स्तर को लंबी अवधि तक धारण करना ही ध्यान का लक्ष्य है। ऐसा करने के लिए एक आराम दायक स्थिति में बैठें तथा अपनी आँखों को बन्द कर 20 डिग्री ऊपर की ओर देखें। तत्पश्चात् एक साधारण छवि जैसा कि एक फूल अथवा एक मूर्ति को अपने मन की आँखों से कल्पना करें तथा देखने की चेष्टा करें। हर बार ध्यान करने के लिए एक ही चित्र होना चाहिए तथा अधिक ज्वलंत होना चाहिए। इसी मुद्रा में 100 से 1 तक गिनती करें। गिनते समय मन की आँखों से उस चित्र को प्रक्षेचित करें। नित्य अभ्यास के पश्चात् मन अधिक सरलता से अल्फा तथा थीटा स्तर में प्रवेश करने लगेगा तथा ज्यादा लंबी अवधि के लिए एवं अधिक उज्जवल चित्त धारण करने में सक्षम होगा। प्राचीन काल से अभ्यास के रूप में यही ध्यान है। अनिवारक ध्यान (पैसिव मैडिटेशन) का यह रूप समग्र लाभ देता है। परन्तु यह ध्यान का प्रथम कदम है। इस अनिवारक ध्यान से हमें औजस्वी (डाईनामिक) ध्यान की ओर अग्रसर होना है। अनिवारक ध्यान व्यापक तथा महान लाभ प्रदान करता हैं। औजस्वी ध्यान विशिष्ट लाभ प्रदान करता है तथा किन्ही विशेष इच्छाओं को पूर्ण करता है।

थीटा स्तर में मन की आँखों द्वारा प्रक्षेपित विशिष्ट चित्र या दृश्य, अवचेतन मन को गम्भीर रूप से प्रभावित करता है। इन तकनीकों के नियमित अभ्यास से व्यक्ति, अल्फा तथा थीटा स्तर में, पूर्ण रूप से सतर्क रहकर, प्रवेश कर सकता है, जो जीवन में आश्चर्यजनक परिणाम प्रदान करते हैं।

हर व्यक्ति में एक अथाह, असीम तथा अद्भुत शक्ति का भण्डार है। अनिवारक तथा औजस्वी ध्यान द्वारा हम उन शक्तियों का प्रयोग हमारे दैनिक समस्याओं पर काबू पाने, सुख–समृद्धि प्राप्त करने तथा कुछ विशेष एवं विशिष्ट इच्छाओं को पूर्ण करने में कर सकते हैं। नियमित ध्यान से निश्चित ही व्यक्ति को अद्भुत लाभ प्राप्त होता है तथा व्यक्ति आत्म–खोज की एक रोमान्चक यात्रा पर अग्रसर होता है।

''हमारे व्यक्तित्व की उत्पत्ति हमारे विचारों में है; इसलिए ध्यान रखें कि आप क्या विचारते हैं, शब्द गौण हैं, विचार मुख्य हैं; और उनका असर दूर तक होता है।'' **– स्वामी विवेकानंद**

"विनाश से विकास की ओर"

महावीर सिंह रावत
सहायक लेखाधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

नदियों को बना दिया नाला
नाले को बना दी नाली
पेडो को काट कर
पहाड़ कर दिया खाली।
जब पट जायेगी नदी
बढ़ने को जगह नहीं मिलेगी खाली
जब हो जायेगें पहाड़ नंगे
तब कौन करेगा रखवाली।
ऐसे ही सैलाब आते रहेंगे
पहाड़ के पहाड़ दरकते रहेंगे
क्योंकि
पहाड़ों को हमने पहाड़ नहीं
उन्हें विकास से जोड़ दिया
पहाडों को हिलाकर
उन्हें खोखला कर दिया।
अब प्रकृति का तांडव
कोहराम मचाता रहेगा
हर वर्ष न जाने कितनी
विनाश लीलाएं रचाता रहेगा।
हर विनाश लीलाओं ने
हमें संभलने का मौका दिया
पहले थोड़ा–थोड़ा
अब तो उसने पूरा बर्बाद कर दिया।
क्योंकि हम सचेत नहीं हुए
नदियों को नाला समझ गये
जहां जगह मिली
वहीं भवन खड़े कर दिये।
पहाड़ों की हरियाली छीनकर
उसे मरू बनाने पर तुल गये
पहाड़ों का सीना छलनी कर
विकास का पहिया घुमाने लगे।
अब हमें
नदी को नदी समझना होगा
पहाड़ों को हरियाली से आच्छादित करना होगा
आस्था से जुड़े पवित्र धामों को
व्यवसायीकरण से रोकना होगा
विकास का पहिया
पर्यावरण के अनुरूप घुमाना होगा।
बातें केवल कागजों तक सीमित न रहें
धरातल पर इन्हें उतारना होगा
विनाश से विकास के पथ पर
उत्तराखण्ड को ले जाना होगा।

"बेचारा"

गणेश प्रसाद
सहायक लेखाधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

जाड़ों के दिन थे। सर्दी ने मानो सभी जीवों की ''कुल्फी'' जमाने की ठान रखी थी। दाँत ऐसे बज रहे थे जैसे कि कीर्तन कर रहे हों तथा हाथ भी यही चाहते थे कि इस सर्दी में कोई बेदर्द उनसे हाथ न मिलाए। गांव से पांच दिन पहले भेजा हुआ तार कल शाम को ही मिला था। ''चाचा बीमार हैं जल्दी आओ''। ऐसे में महेश अपने कोठरी नुमा मकान में से बाहर निकला। दरवाजे पर ताला लगाने के पश्चात् उसने मोटे किन्तु जगह–जगह से घिसे हुए कम्बल को अपने चारों ओर अच्छी तरह से लपेट लिया। वह अपने बीमार चाचा को देखने के लिए गाँव की ओर चल पड़ा। महेश एक प्राईवेट फैक्टरी में मामूली सा क्लर्क था। विश्व के इस द्वितीय जनसंखीय देश भारतवर्ष में उसका एक तो अपना मित्र ही था या फिर यह चाचा। अभी गाँव काफी दूर था। धीरे–धीरे शाम ढल रही थी। पक्षी अपने छोटे–छोटे फ्लैटनुमा घोसलों की ओर जा रहे थे। दफ्तर के बाबू लोगों को सिर्फ अपनी आय से पूरा पूरा मतलब था, चाहे वे काम करें या न करें। सुबह नौ बजे से लेकर शाम पांच बजे के बीच के 'कष्टमय' तथा 'असहनीय' समय को किसी प्रकार काट कर वह घरों की ओर ऐसे भाग रहे थे कि कहीं साहब उन्हें इस देश की कुछ और तरक्की के लिए थोड़े समय के लिए न रोक लें। चाहे उन्होनें वह कष्टमय समय चाय पीकर, सिगरेट फूंककर या गप्पे मारने में ही क्यों न काटा हो। महेश इन्ही लोगों के बारे में सोचता हुआ गुम–सुम सा चला जा रहा था। वातावरण में नमी और भी बढ़ गई थी तथा रोशनी भी धुंधलकी हो गई थी।

महेश एक खोमचे वाले के पास पहुँचा और कुछ सेब अपने बीमार चाचा के लिए खरीदे। इस मंहगाई के जमाने में उसने बची हुई कुल 150 रुपये की राशि में से 35 रूपये इन सेबों पर बलि चढ़ा दिए। पास की एक पनवाड़ी की दुकान से उसने एक बीड़ी का पैकेट 9 रू0 में खरीदा और फिर से चल पड़ा। पनवाड़ी ने भी उसे 10 रूपये में से 9 रू0 बीड़ी के काट कर बाकी के एक रू0 पर बड़ी ही सफाई से 'चपत' लगा कर दो 'हॉल्स' की गोलियां थमाते हुए कहा– ''बाबूजी सर्दी से गला यदि खराब हो जाए तो राम नाम लेकर एक गोली खा लेना–देखना गला बिल्कुल ही साफ और दूसरी अगली सर्दी के लिए बचाकर रखना।'' महेश को गुस्सा भी आया और दुःख भी हुआ।

रास्ते में उसके दोस्त का मकान पड़ता था। उसकी तीन लड़कियां तथा दो लड़के थे। दोस्त चाहे जितना भी भला मानस तथा नेक था, इसके विपरीत उसकी पत्नी उतनी ही दुष्ट थी। महेश ने सोचा कि चलो इनसे मिलता हुआ जाए। महेश के दस्तक देने पर सबसे बड़ी लड़की बीना ने दरवाजा खोला जो कि 'इण्टर' में थी। बाकी के बच्चे भी कमरे में उछल–कूद मचा रहे थे। महेश को देखते ही वे किलकारी मारकर चाचा आए–चाचा आए और महेश की टांगों से लिपट गए। महेश अभी कुछ समझ पाता कि तभी भीतर से भाभी कमरे में आई और

बोली–आइये भाई साहब ! अरे ! यह क्या ? सेबों के लिफाफे को जबरदस्ती पकड़ते हुए–आखिर आप क्यों इन बच्चों के लिए इतना कष्ट करते हैं ? जब पिछली दफा आए थे तो अंगूर पकड़ा गए थे। इसके साथ ही उसने वे सेब अपने बच्चों में बाँट दिए। अब महेश भी भला क्या कह सकता था इसलिए वह ''कोई बात नहीं'' कह कर चुप्पी साध गया। महेश के पूछने पर कि उसका मित्र कहां है तो जवाब मिला–घर में नहीं है जब आयेंगे तो वह बता देगी। उसने महेश को बैठने तक के लिए नहीं कहा। बस स्टैंड पर पहुंच कर महेश ने पच्चीस रूपये का गाँव के लिए टिकट खरीदकर अपनी जेब को टटोला तो 80 रूपये की पूंजी अभी से बाहर निकलने के लिए बेचैन हो उठी। जब बस चल पड़ी तो महेश के पास बैठे हुए एक वृद्ध ने खांसते हुए बड़े ही याचनामय स्वर में पूछा–''बेटा तेरे पास बीड़ी होगी ?'' कहने को तो महेश न भी कह सकता था लेकिन पता नहीं क्या था उस बूढ़े की आवाज में कि महेश ने बिना किसी झिझक के चाचा के लिए खरीदा हुआ बीड़ी का पैकट उसे थमा दिया। बूढ़ा शायद 'चेन–स्मोकर' था। एक–एक करके पूरा बीड़ी का पैकट ही सटक गया। धन्यवाद तो दूर उसने महेश की ओर दुबारा देखना भी मुनासिब न समझा और सीट की पीठ पर टेक लगाकर बदस्तूर खांसता रहा। आज महेश के साथ जो कुछ भी हो रहा था उससे उसका मन वितृष्णा से भर उठा। उसने ऊंघते हुए आँखें बन्द कर लीं। ठीक साढ़े आठ बजे रात को बस गाँव के निर्जन व खस्ताहाल बस स्टाप पर पहुंची। चाचा का घर अब थोड़ी सी दूरी पर ही था। वह पैदल ही चल पड़ा। अंधेरा काफी हो चुकने के कारण उबड़–खाबड़ रास्ता भी ढंग से दिखाई नहीं दे रहा था। कम्बल को फिर से ठीक तरह लपेटने के बाद जब उसने जेबों में हाथ डाला तो रूपये गायब। अभी वह कुछ समझ पाता कि बस आगे के स्टेशन की ओर रवाना हो गई। जिसने उसकी जेब काटी वह भी बस में ही होगा क्योंकि यहां तो उसके सिवाय कोई नहीं उतरा। अब वह शहर वापिस कैसे लौट पायेगा? इसी उधेड़–बुन में वह आगे बढ़ गया।

आगे एक मोड़ था जहां एक भिखारी बैठा करता था अपने चिथड़ों में। अब वह काफी बूढ़ा हो गया था। महेश जब उसके नजदीक पहुँचा तो पाया कि भिखारी ठण्ड से ठिठुर रहा था और उसका शरीर नीला पड़ता जा रहा था। महेश ने जल्दी से अपना कम्बल उतारा और उसके ऊपर ओढ़ा दिया। भिखारी की कपकपी कुछ कम हुई और वह उसे दुआएं देने लगा।

अभी वह कुछ दूर ही गया था कि लालटेन थामे उसने चाचा को अपनी ओर आते देखा। भगवान का शुक्र अदा करते हुए, चलो अब चाचा स्वस्थ हो गये हैं, प्रणाम किया और बोला ''चाचा ! ठीक हो? माफ करना तार काफी देर में मिला।'' चाचा–''मैं ठीक हूं। भूखा होगा! जरा गट्टू हलवाई से कुछ खाने को ले आऊं! तू घर चल।''.... कहकर आगे बढ़ गये।

महेश जब घर पहुंचा तो बाहर खड़े हुए लोगों में से कुछ स्त्रियां उसे देखते ही रो पड़ीं। तभी वैध जी लपककर उसके पास आये और बोले–''अरे महेश! तूने आने में देरी कर दी। थोड़ी देर पहले ही चाचा चल बसे दमा और ऊपर से बेतहाशा धूम्रपान, दोंनो फेफड़े खराब.....टिक ना सके''। बार–बार यही कहते रहे 'मेरे मेशी को गट्टू हलवाई की जलेबी बहुत पसन्द है! जब आयेगा.....खूब खिलाऊंगा। कहां रह गया मेरा मेशी?' यह सुन कर महेश बिल्कुल ठगा सा खड़ा रह गया। चुप्पी साधे हुए–अवाक सा महेश–डबडबाई आँखें लिए.....यही सोचते हुए, आख़िर जाते–जाते हुए भी चाचा.....उस जैसे अभागे पर अपना दुलार बरसा गए।

रोचक तथ्य

1. वेटिकनसिटी दुनिया का सबसे छोटा देश है इसका क्षेत्रफल 0.2 वर्ग मील है और इसकी आबादी लगभग 770 है इसमें से कोई भी इसका परमानेंट नागरिक नहीं है।
2. **''टाईपराईटर''** सबसे लम्बा शब्द है जोकि **''कीबोर्ड''** पर एक की लाइन पर टाइप होता है।
3. विश्व के किसी भी देश की भाषा के किसी भी शब्द को हिन्दी भाषा में हू–ब–हू लिखा जा सकता है।

"कुदरत का कहर"

महावीर सिंह रावत
सहायक लेखाधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

कुदरत का कहर
सैलाब बन उमड़ पड़ा
रौद्ररूप धारण कर
इंसान को मिटाने चला।

भगवान का दरबार डूबो
इंसान को कोस रहा
काल का चक्र घुमाकर
इंसान को अतिक्रमण से रोक रहा।

कई जिन्दगियां लील
खुद मदमस्त हो गया
तबाही का मंजर पीछे छोड़
इंसान को बौना कर गया।

दरकते पहाड़, टूटी सड़कें
बिलखती जिन्दगियाँ दें गया
इंसान की बनायी हर व्यवस्था को
एक झटके में बहा ले गया।

कुदरत की राह में
दीवारें खड़ी कर क्या पाया
उसने तो राह बना ली
इंसान तो बेबस नजर आया।

सब कुछ तबाह कर
वो तो शान्त हो जायेगा
इंसान को फिर से लड़ने को
मजबूर वो कर जायेगा।

यही तो जीवन चक्र है
कभी वह खुद मिटेगा
कभी दूसरों को मिटायेगा
फिर भी आगे बढ़ता जायेगा।
आगे बढ़ता.....

तू न थकेगा कभी,
तू न रूकेगा कभी,
तू न मुड़ेगा कभी,
कर शपथ, कर शपथ, कर शपथ,
अग्निपथ अग्निपथ अग्निपथ।
- हरिवंश राय बच्चन

छायाकार - गणेश प्रसाद, सहायक लेखाधिकारी

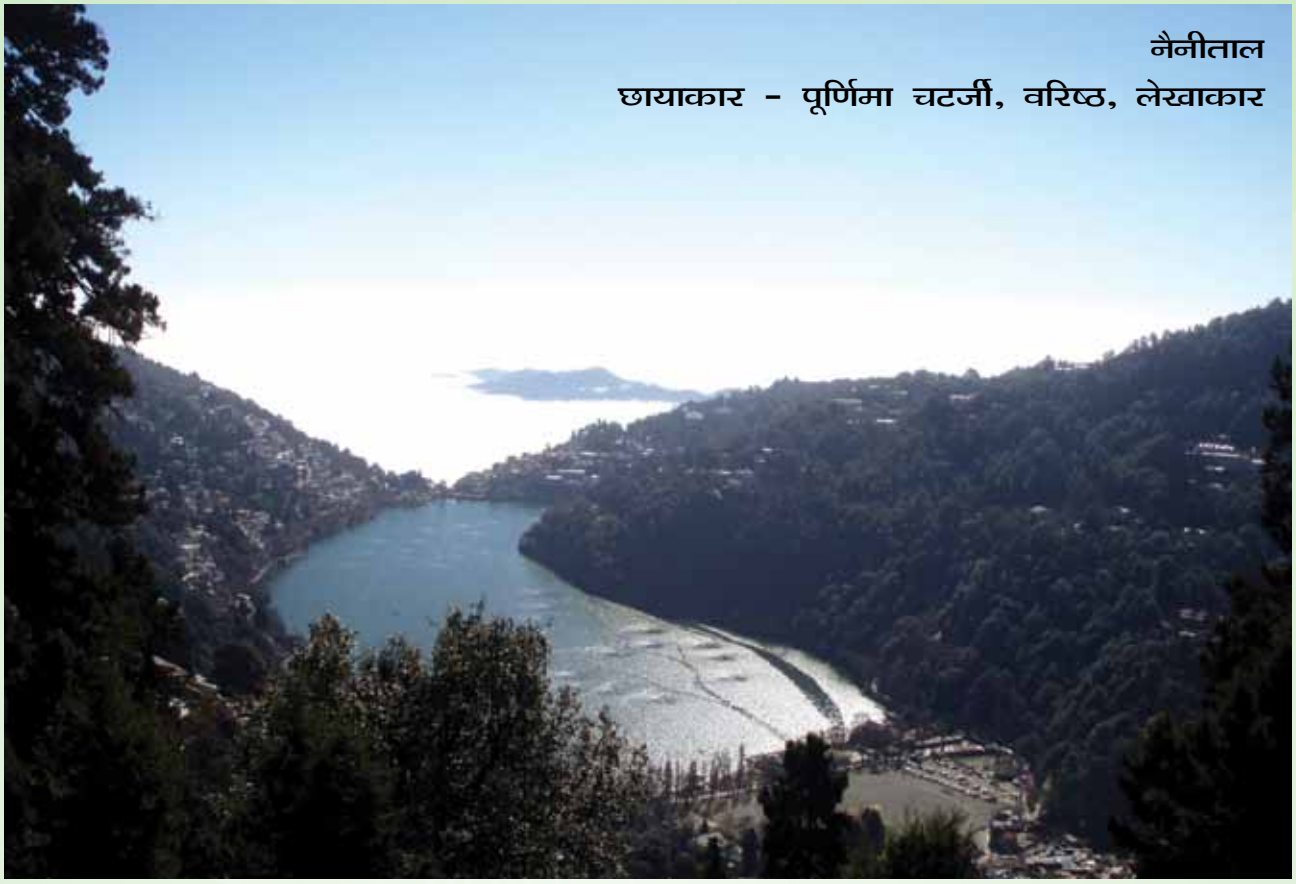

नैनीताल
छायाकार – पूर्णिमा चटर्जी, वरिष्ठ, लेखाकार

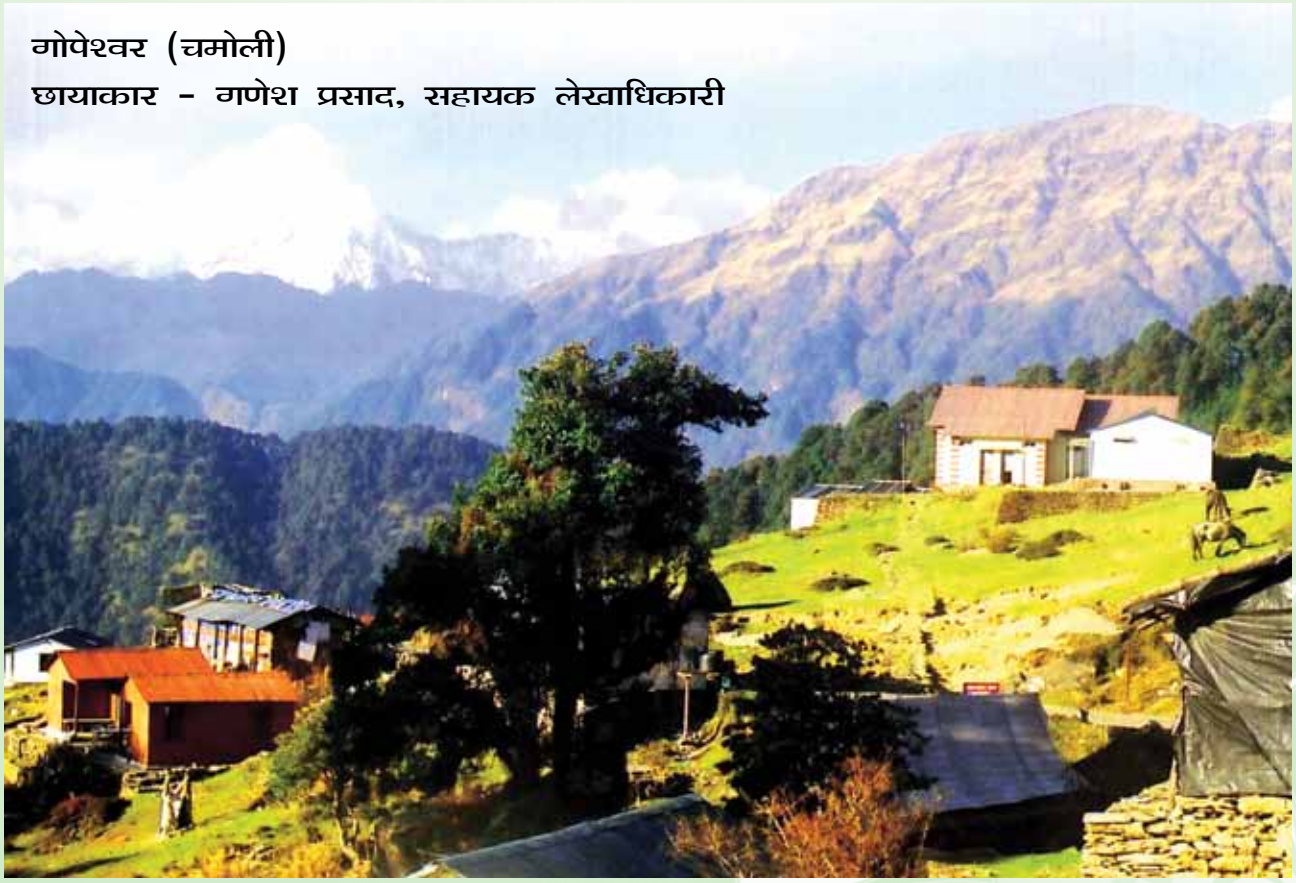

गोपेश्वर (चमोली)
छायाकार – गणेश प्रसाद, सहायक लेखाधिकारी

"यदि महिलाएँ विश्व पर शासन करतीं"

कु० रेखा
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा), उत्तराखण्ड

यदि महिलाएँ विश्व पर शासन करतीं तो क्या होता?.....

यह प्रश्न कुछ तथाकथित लोगों के लिए हास्यास्पद हो सकता है, कुछ बुद्धिजीवी लोगों के लिए परिवर्तनशील हो सकता है, कुछ रूढ़िवादियों के लिए सशंयात्मक हो सकता है। कुछ लोग जो हास्यास्पद समझेगें तो उनके ऐसा समझने का आधार वे महिलाओं की शारीरिक और मानसिक शक्ति को बनाएगें, उनका मानना होता है कि महिलाएं शारीरिक रूप से और विशेषतया मानसिक रूप से प्रशासन चलाने में सक्षम साबित नहीं होंगी। चूँकि महिलाएं स्वभावतया भावुक एवं कमज़ोर होती हैं, उनकी निर्णय–निर्माण क्षमता पर भी उनकी भावुकता हावी रहती है इसीलिए उनके द्वारा लिए गए निर्णय प्रभावशाली नहीं हो सकते हैं। ये मानना हुआ कुछ तथाकथित पुरूषवादी सोच रखने वालों का।

परिवर्तनवादी या कहें कि ऐसे लोग जो समाज में होने वाले किसी भी परिवर्तन को दूरगामी दृष्टिकोण से तथा सकारात्मक परिणामों के साथ सोचते हैं, वे इस कदम का सर्वथा स्वागत ही करेगें। इनका मानना है कि महिलाएँ भी पुरूष की ही तरह शासन कर सकती हैं और प्रभावकारी निर्णय भी ले सकती हैं। इनके दृष्टिकोण से महिलाओं की ममत्वपूर्ण प्रकृति से समाज की विसंगतियों में व्यापक परिवर्तन हो सकता है। ये महिलाओं के शारीरिक बल को और मानसिक बल को न देखकर उनके चरित्र में समाविष्ट करूणा, दया, ममता, प्रेम, सहिष्णुता आदि को देखते हैं और हमारे आज के दूषित वातावरण में इसी की महती आवश्यकता है।

आज भी 21वीं सदी में हमारे समाज के एक बड़े वर्ग में रूढ़िवादी सोच रखने वाले ऐसे लोग हैं जो महिलाओं को शिक्षा देना, उनका घर से बाहर निकलकर नौकरी करना, उनका अन्य प्रेरणास्पद गतिविधियों में भाग लेना आदि को तवज्जो नहीं देते हैं। इनका मानना अभी भी वही है कि महिलाएँ घर की चारदीवारी में ही कैद रहें तो अच्छा है। इसका कारण इन वर्गों में या इस वर्ग के लोगों में शिक्षा का स्तर निम्न होना है। इसीलिए इनके लिए महिलाओं की शिक्षा या उनको आगे बढ़ाना ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं है।

उपरोक्त विचारधाराएँ अलग–अलग सामाजिकों की हैं। 20वीं सदी के मध्य से ही इस विषय पर पुरजोर बहस होने लगी थी कि महिलाएँ क्या कर सकती हैं और क्या नहीं। यह बहस हालांकि आज भी चल रही है। लेकिन वर्तमान परिदृश्य में देखा जाए तो शारीरिक बल उतना महत्वपूर्ण नहीं रह गया है जितना आज से दो–तीन दशक पहले होता था। चूँकि तब महिलाएँ भी स्वयं को, बार–बार कहने से कि वे मानसिक रूप से कमजोर हैं या पुरूषों जितनी सबल नहीं है, ऐसा मानने लगी थीं कि वे केवल घर की चारदीवारी तक ही सीमित रह सकतीं हैं। लेकिन 21वीं सदी की महिला ने इस मिथक को तोड़ दिया है। महिलाओं के पास इतने सारे गुण हैं कि वे एक अच्छी शासिका भी बन सकती हैं। प्रकृति ने महिलाओं को पहले से ही सम्पूर्ण बनाया हुआ था लेकिन उसे स्वयं की पहचान नहीं थी कि वह घर की दहलीज को लांघकर सत्तासीन भी हो सकती है।

21वीं सदी की महिलाओं ने और पहले भी अनेक महिलाओं ने शासिका के तौर पर काम किया है जिसमें वे पुरूषों से बेहतर साबित हुई हैं। ब्रिटेन की मार्गरेट थैचर हो या भारत की इंदिरा गांधी, श्रीलंका की श्रीमाओ

भंडारनायके हों सभी ने अपनी नेतृत्व कुशलता का लोहा मनवाया है। यदि सभी प्रमुख स्थानों पर महिलाओं को सत्तासीन कर दिया जाए तो आधी समस्याएँ तो खुद–ब–खुद ही सुलट जाएगीं। एक देश या राष्ट्र की प्रजा को क्या चाहिए होता है सुखी जीवन जीने के लिए रोजी, रोटी, मकान। महिला चूँकि ममतामयी होती है तो उसकी प्रजा भला बिना खाए कैसे सो सकेगी, कैसे उसकी संतानतुल्य प्रजा दर–दर की ठोकर खाएगी और कैसे आश्रय प्राप्त नहीं करेगी।

जब महिलाएँ एक परिवार में ही अपने बालकों को इतना संस्कारवान बना देती है कि उसके बालक तमाम उम्र उन संस्कारों को, गाहे–बगाहे ही, याद तो जरूर रखते हैं तो सोचिए कि महिलाएं ही जब शासिका होगीं तो जनता में लूट–खसोट, चोरी–चकारी, हत्या–मारपीट भी न्यून मात्रा में होंगी अथवा नहीं भी होंगी। महिलाएं सहनशील होती हैं, क्षमा करने की उनकी शक्ति बहुत व्यापक होती है तो उसके शासन काल में उसकी जनता में बात–बात पर होने वाले साम्प्रदायिक दंगे नहीं होगें, लोग एक–दूसरे द्वारा की गई गलतियों (जानबूझकर या अनजाने में) को अनदेखा करना, एक–दूसरे को क्षमा करना शुरू कर देगें तो किसी भी राष्ट्र में शांति बनी रहेगी और घरेलू या आतंरिक कलह की संभावनाएं शून्य के बराबर होगीं।

महिलाओं का एक प्रमुख नकारात्मक गुण माना जाता है, जो कि– ईर्ष्या करना है। लेकिन यदि इस गुण को भी सकारात्मक रूप में लिया जाए तो आस–पास के क्षेत्र, राज्य, देश, महाद्वीप तरक्की की राह पर दौड़ पडेगें। क्योंकि एक–दूसरे की देखा–देखी आगे बढ़ने की होड़ में ये निरन्तर आगे बढ़ेगें। चूँकि शासिका महिलाएं होंगी तो गलाकाट प्रतिस्पर्द्धा होने का तो सवाल ही नहीं है। महिलाएं चूँकि स्वभाव से गोला–बारूद, मिसाइल और अन्य ऐसे ही खतरनाक युद्धक हथियारों और उपकरणों को नापसंद करती हैं, खून–खराबा उनसे करवाना तो दूर देखा तक नहीं जाता है तो युद्ध करना या करवाने का तो कोई सवाल ही नहीं रह जाएगा। और जब युद्ध नहीं होगा तो इतनी बड़ी सेना रखने की भी आवश्यकता नहीं होगी और न ही अमेरिका को जगह–जगह अपना हस्तक्षेप करना पड़ेगा कि ईरान मिसाइल बना रहा है या उ.कोरिया ने छिपकर परमाणु परीक्षण कर लिया है और इराक भी शांतिपूर्वक रह सकेगा। चीन जो लगभग सब जगह अपनी साख जमाना चाहता है वह भी चैन से बैठकर बाकी देशों की हड़पी हुई ज़मीने (भू–क्षेत्र) भी वापस कर देगा और शायद तिब्बती, ताइवानी, मकाऊ निवासी भी सुखपूर्वक अपनी पैतृक भूमि पर वापस लौट सकेगें।

पाकिस्तान और बांग्लादेश में स्थिति 'नियंत्रणाधीन' होगी और सभी आतंकवादी पेशेवर कृषक बनकर जी.डी.पी. में योगदान दे रहे होगें। भारत की आंतरिक स्थिति में छेद करने वाले माओवादी, नक्सलवादी, उल्फा, उग्रवादी आदि संगठन भी अपनी–अपनी माँगे छोड़ देगें और समाजकल्याण हेतु समाज कार्य करेगें। चूँकि सामाजिक पिछड़ेपन, गरीबी, मंहगाई और अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र आदि सभी शास्त्रों की व्याख्याएँ और विचारधाराएँ पुरूषों की दी हुई हैं। बड़े–से–बड़े सिद्धांत सब पुरूषों द्वारा अर्थात् पुरूष चिंतकों द्वारा दिए गए हैं। अतः महिलाएँ शासन करतीं या करें तो इन सभी विचारधाराओं और व्याख्याओं और सिंद्धातों की या तो आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी या फिर इनकों सरल करके पुनर्लेखन किया जाएगा ताकि ये सभी को समझ आ सकें।

इस प्रकार महिलाएं यदि शासन करें तो बस एक–आध नुकसान या हानि को छोड़कर लाभ–ही–लाभ होगें। समाज, देश व विश्व प्रगति की ओर अग्रसर होगा। लेकिन अभी तक उपरोक्त सब एक कोरी कल्पना ही है कि महिलाएँ शासन करें तो ..... ऐसा होगा। लेकिन ऐसा शायद ही कभी सम्भव हो पाएगा क्योंकि यहाँ तक आने में, कि हम ऐसा सोच पा रहे हैं कि यदि महिलाएँ शासन करतीं तो क्या और कैसा होता ....., इतनी सदियां लग गई हैं, हकीकत में ऐसा होने के लिए शायद हमें कलियुग के बाद वाले युग का इंतजार करना पड़ेगा .....।

"जो आप कहो"

बृजेश कुमार
लेखाकार
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

पत्नीः खाने में क्या बनाऊँ?
पतिः कुछ भी बना लो क्या बनाओगी?
पत्नीः जो आप कहो।
पतिः दाल चावल बना लो।
पत्नीः सुबह ही तो खाए थे।
पतिः तो रोटी सब्जी बना लो।
पत्नीः बच्चे नहीं खायेंगे।
पतिः तो छोले पूरी बना लो।
पत्नीः मुझे तली हुई चीजों से परहेज है।

पतिः तो अंडा भुर्जी बना लो।
पत्नीः आज बृहस्पतिवार है।
पतिः परांठे?
पत्नीः रात को परांठे नहीं खाने चाहिए।
पतिः कढ़ी–चावल?
पत्नीः दही नहीं है।
पतिः इडली सांभर?
पत्नीः समय लगेगा न, पहले बोलना था।
पतिः होटल से मंगवा लेते हैं।
पत्नीः रोज़ रोज़ बाहर का खाना ठीक नहीं है।
पतिः अच्छा मैगी बना लो।
पत्नीः पेट नहीं भरेगा।
पतिः तो फिर क्या बनाओगी?
पत्नीः जो आप कहो।

"सूचना का अधिकार : एक कारगर एवं प्रभावी कानून"

विनोद कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखाधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

सूचना का अधिकार अधिनियम दिनांक 12 अक्टूबर 2005 से प्रभाव में आया, जिसका विस्तार जम्मू–कश्मीर राज्य के अतिरिक्त सम्पूर्ण भारत पर है। यह कानून शासन के कामकाज में पूर्ण पारदर्शिता लाने के साथ ही साथ भ्रष्टाचार रोकने में भी अपना अमूल्य योगदान प्रदान करता है। आम नागरिकों को न्याय दिलाने के लिए यह अब तक के सबसे कारगर एवं प्रभावी कानूनों में से एक है। 'सूचना का अधिकार' कानून एक ऐसा कानून है, जो समस्त उच्च पदों पर आसीन सभी शक्तिशाली व्यक्तियों को अधिनियम के प्रावधानों के अन्तर्गत अनुरोधकर्ता को सूचना उपलब्ध कराने हेतु विवश करता है तथा अपने कामकाज में पूर्ण पारदर्शिता लाने के लिए बाध्य करता है। इस कानून ने सभी सामान्य नागरिकों को न्याय दिलाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। वर्तमान समय में सामान्य नागरिकों के लिए यह सबसे कारगर अस्त्र है।

उद्देश्य:– नागरिकों को अधिकार सम्पन्न बनाना तथा सरकारी कार्यों में पारदर्शिता तथा जवाबदेही को बढ़ावा देना। भ्रष्टाचार मुक्त समाज का निर्माण।

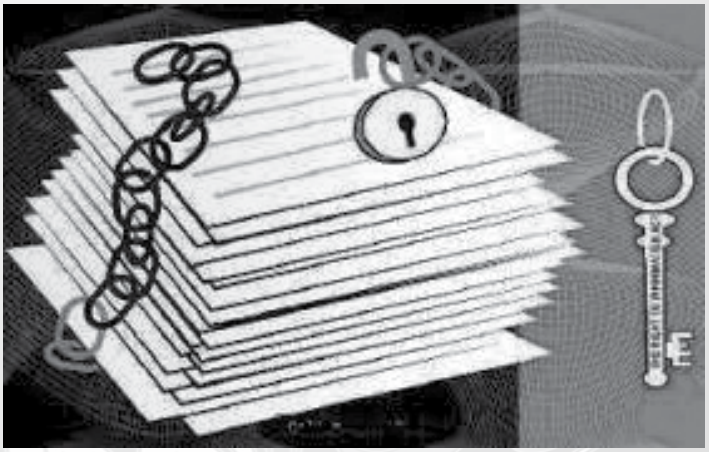

सूचना से अभिप्राय:– किसी भी स्वरूप में कोई भी सामग्री सूचना है। इसमें इलैक्ट्रोनिक रूप से धारित अभिलेख, दस्तावेज, ज्ञापन, ई–मेल, मत, सलाह, विज्ञप्ति, परिपत्र, आदेश, लॉगबुक, संविदा, रिपोर्ट, कागज पत्र, नमूने, माडल, आंकड़ो सम्बन्धी सामग्री शामिल है।

सूचना मांगने का तरीका:– सूचना का अधिकार के अन्तर्गत सूचना मांगने हेतु आवेदक लिखित रूप से अपना अनुरोध पत्र डाक द्वारा या स्वयं या फिर इलैक्ट्रोनिक माध्यम से प्रेषित कर सकता है। सूचना अनुरोधकर्ता हिन्दी, अंग्रेजी या सम्बन्धित क्षेत्र की सरकारी कामकाज की भाषा में प्रस्तुत कर सकता है। सूचना हेतु अनुरोध पत्र लिखित या टंकित रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

शुल्क:– सूचना मंगाने हेतु निर्धारित शुल्क 10/– रूपये है। उक्त शुल्क का भुगतान मांग–पत्र/बैंकर्स चैक, नकद या पोस्टल आर्डर के माध्यम से किया जा सकता है। नियमावली में सूचना की आपूर्ति हेतु फोटोकापी आदि प्राप्त करने के लिए अतिरिक्त शुल्क का भी प्रावधान किया गया है, जोकि सृजित

या फोटोकापी किए गये प्रत्येक पृष्ठ (A4 या A3 आकार हेतु) ₹ 2/– निर्धारित है। बी0पी0एल0 श्रेणी के आवेदकों के लिए कोई शुल्क नहीं है।

सूचना अनुरोधकर्ता को सूचना की आपूर्ति:– केन्द्रीय लोक सूचना अधिकारी के स्तर से सूचना अनुरोधकर्ता को तीस दिन के भीतर सूचना की आपूर्ति कर दी जानी चाहिए। तीस दिन की अवधि से अभिप्राय कार्यालय में सूचना अनुरोधकर्ता का पत्र प्राप्त होने की तिथि तथा सूचना अनुरोधकर्ता को सूचना उपलब्ध कराने हेतु प्रेषित किए गये पत्र की वास्तविक प्रेषण तिथि से है। इस सम्बन्ध में सूचना अनुरोधकर्ताओं के पत्रों का निपटारा करने हेतु समयावधि के लिए निम्नलिखित प्रावधान है :–

(1)	सामान्य स्थिति में सूचना की आपूर्ति	– 30 दिन
(2)	यदि सूचना व्यक्ति के जीवन अथवा स्वतंत्रता से सम्बन्धित हो	– 48 घण्टे
(3)	यदि आवेदन/अनुरोध पत्र हस्तान्तरण द्वारा अन्य लोक प्राधिकारी से प्राप्त होता है	– सम्बन्धित लोक प्राधिकारी द्वारा आवेदन की प्राप्ति के 30 दिन के भीतर
(4)	ऐसी सूचना की आपूर्ति जिसमें आवेदक को अतिरिक्त शुल्क का भुगतान करने को कहा जाए।	– आवेदक को अतिरिक्त शुल्क के बारे में सूचित करने तथा आवेदक द्वारा उत्तर देने की अवधि को नहीं गिना जाएगा।

लोक सूचना अधिकारी के स्तर से निर्धारित समयावधि में सूचना प्राप्त न होने पर या प्राप्त सूचना से सन्तुष्ट न होने या फिर सूचना उपलब्ध कराने हेतु मांगे गये शुल्क से सन्तुष्ट न होने पर सूचना अनुरोधकर्ता को अपील करने का अधिकार है। अपील केन्द्रीय लोक सूचना अधिकारी से संसूचना प्राप्त होने के 30 दिन के अन्दर की जा सकती है। यदि प्रथम अपीलीय अधिकारी सन्तुष्ट हो तो 30 दिन के पश्चात् भी अपील स्वाकार की जा सकती है। अपील करने के लिए किसी शुल्क का भुगतान अपेक्षित नहीं होता है।

अपील का निस्तारण :– सूचना का अधिकार के अन्तर्गत अपील का निस्तारण एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है, जोकि अर्द्धन्यायिक प्रकृति का कार्य है। इसलिए किसी भी अपील पर विचार करते हुए अपीलीय अधिकारी को अत्यन्त सावधानीपूर्वक एवं विवेकपूर्ण निर्णय करना होता है। अपील पर निर्णय इस प्रकार से होना चाहिए कि अपीलकर्ता को न्याय का अहसास हो। अपीलीय अधिकारी का निर्णय 'स्पीकिंग आर्डर' होना चाहिए, जिसके द्वारा तर्कसंगतपूर्ण तरीके से अपील का निस्तारण किया गया हो। अपील के निस्तारण के लिए 30 दिन की समय सीमा निर्धारित है लेकिन अपरिहार्य कारणों से अपीलीय अधिकारी, अपील के निस्तारण में 45 दिन का समय ले सकता है। निस्तारण में अधिक समय लगने के कारणों का लिखित में उल्लेख किया जाना चाहिए। द्वितीय अपील अर्थात आयोग के समक्ष अपील प्रस्तुत करने हेतु सूचना का अधिकार अधिनियम के अन्तर्गत 90 दिन की समय सीमा निर्धारित है।

यह सम्भव है कि सूचना अनुरोधकर्ता को प्रदान की जाने वाली सूचना तीसरी पार्टी अर्थात आवेदक से भिन्न अन्य व्यक्ति से सम्बन्धित हो। ऐसी स्थिति में लोक सूचना अधिकारी को पांच दिन के अन्दर लिखित रूप से तृतीय पक्ष से अनुरोध करना चाहिए कि तृतीय पक्ष लिखित अथवा मौखिक रूप से सूचना को प्रकट करने या न करने के सम्बन्ध मे अपना पक्ष रखे। यदि तीसरी पार्टी ने ऐसी सूचना को गोपनीय माना है तो केन्द्रीय लोक सूचना अधिकारी से अपेक्षित है कि वह सूचना को प्रकट करने या न करने के बारे में उचित एवं विवेकपूर्ण निर्णय ले। ऐसी स्थिति में मार्गदर्शी सिद्धान्त यह है कि यह देखा जाए कि

ऐसा प्रकरण लोक हित में है या नहीं। लोक हित सर्वोपरि है, अतः यदि सूचना लोक हित में है तो उसके प्रकरण पर विचार किया जाना चाहिए।

उपरोक्त सम्बन्ध में यह उल्लेखनीय है कि किसी भी सूचना अनुरोधकर्ता द्वारा मांगी गई सूचना से लोक सूचना अधिकारी को क्रोधित नहीं होना चाहिए तथा न ही उसे सूचना अनुरोधकर्ता से अपने कार्य एवं व्यवहार द्वारा इस प्रकार का प्रकटन करना चाहिए। अपितु सूचना अनुरोधकर्ता को सभी सम्भव एवं तर्क संगत सहायता प्रदान करते हुए उचित सम्मान की दृष्टि से देखा जाना चाहिए। लोक सूचना अधिकारी को चाहिए कि वह सूचना का अधिकार के अन्तर्गत बिना किसी वैध कारण के कोई भी आवेदन–पत्र निरस्त न करें। यदि सूचना अनुरोधकर्ता द्वारा वांछित सूचना इस प्रकार की है, जिसे प्रकटन से छूट प्राप्त है तो यह लिखित रूप से सूचना अनुरोधकर्ता को सूचित किया जाना चाहिए। सूचना अनुरोधकर्ता से अधिनियम में निहित प्रावधानों के अनुसार यह नहीं पूछा जा सकता कि उनके द्वारा सम्बन्धित सूचना किस लिए मांगी जा रही है, अतः किसी भी सूचना अनुरोधकर्ता के लिए सूचना मांगने का कारण बताना आवश्यक नहीं है। साथ ही सूचना अनुरोधकर्ता से कभी भी व्यक्तिगत प्रश्न जैसे कि सम्बन्धित सूचना मांगने के लिए उसका उद्देश्य या लक्ष्य उसका कारोबार, परिवार आदि के प्रश्न नहीं पूछे जाने चाहिए। सूचना अनुरोधकर्ता से अपेक्षित है कि यह वांछित सूचना का स्पष्ट तथा यथा सम्भव बिन्दुवार उल्लेख करें, जिससे कि लोक सूचना अधिकारी द्वारा सूचना की आपूर्ति निर्धारित समयावधि में पूर्ण रूप से प्रदान की जा सके।

सूचना का अधिकार अधिनियम के अन्तर्गत सूचना मांगने के लिए कोई निर्धारित प्रारूप नहीं है। इसलिए यदि कोई अशिक्षित/अल्पशिक्षित व्यक्ति भी अपने तरह सूचना मांगता है तो लोक सूचना अधिकारी का कर्तव्य बनता है कि वह विवेकपूर्ण तरीके से आवेदन–पत्र पर विचार करते हुए वांछित सूचनाएं उपलब्ध कराए। लोक सूचना अधिकारी यदि कोई ऐसा सूचना अनुरोध–पत्र प्राप्त करता है, जोकि उसके कार्यालय से सम्बन्धित नहीं है अर्थात आवेदन–पत्र की विषय–वस्तु किसी अन्य लोक प्राधिकारी से सम्बन्धित है, तो उक्त आवेदन–पत्र की प्राप्ति के पाँच दिन के भीतर सम्बन्धित लोक प्राधिकारी को हस्तान्तरित कर दिया जाना चाहिए। लोक सूचना अधिकारी को कोई भी आवेदन–पत्र निरस्त नहीं करना चाहिए। ऐसी स्थिति में जब यह ज्ञात न हो कि वांछित सूचनाएं किस लोक प्राधिकारी से सम्बन्धित है तो सूचना अनुरोधकर्ता को इस तथ्य से अवगत करा दिया जाना चाहिए।

लोक सूचना अधिकारी का दायित्व बनता है कि वह अपूर्ण, असत्य एवं भ्रामक सूचनाएं उपलब्ध न कराए। यदि कोई लोक सूचना अधिकारी इस प्रकार से सूचना प्रदान करता है तो वह सूचना का अधिकार अधिनियम के अन्तर्गत दण्ड के प्रावधानों को आकृष्ट करता है तो उसके विरूद्ध इसके साथ ही सेवा नियमावली के सुसंगत प्रावधानों के अनुसार अनुशासनिक कार्यवाही भी की जा सकती है।

अन्त में यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि 'सूचना का अधिकार' कानून ने सार्वजनिक जीवन में पारदर्शिता लाकर आम व्यक्ति को भी सम्मान के साथ जीने का अधिकार प्रदान किया है। यह कानून एक ऐसा कानून है, जिसके माध्यम से आम व्यक्ति भी उच्च पदों पर आसीन व्यक्ति से सीधे सवाल पूछने का साहस कर सकता है। इस सम्बन्ध में यह उल्लेख करना समीचीन होगा कि आम आदमी के इस शस्त्र का यदि कहीं दुरूपयोग होता है तो उसे हतोत्साहित किया जाना चाहिए, जिससे कि आम व्यक्ति का इसमें और ज्यादा विश्वास बढ़े तथा शासन–प्रशासन को भी अपनी उर्जा व्यर्थ नष्ट न करनी पड़े।

''पुस्तकों का मूल्य रत्नों से भी अधिक है, क्योंकि पुस्तकें अन्तःकरण को उज्ज्वल करती हैं।''

– महात्मा गाँधी

"हमारे शुभ चिन्ह"

एन०के० सुब्रमनियन
वरिष्ठ लेखाकार
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

नारियलः सामाजिक धार्मिक कार्य का शुभारम्भ हम लोग नारियल पूजने से करते हैं जैसे नारियल कोई मूर्ति हो देवता हो जिस पर तिल अक्षत फल–फूल और वस्त्र चढ़ा कर पूजा की जाती है।

दूसरा ढंग बिलकुल अलग है नारियल पूरी शक्ति से एक ही बार में तोड़ कर गिरी गूदा निकाल कर बॉट देते हैं और कार्य शुरू करते हैं।

कार्य के शुभारम्भ में नारियल तोड़ना इस आत्म परीक्षण आत्म दर्शन का सीघा साधा सबूत है कि देख लो असली तत्व है कि नही। सामूहिक रूप से नारियल तोड़ कर सबको गिरी बांटना इस बात का प्रमाण है, कर्म धर्म है, यही संगठन का मूल तत्व है; वास्तविकता को स्वीकार करना ही नारियल का स्पर्श करना है। नारियल को तोड़ना ही सच्चेतत्व पूर्ण श्रीफल के प्रति संकल्प लेना है।

अमर दूबः दूब इस सत्य का साक्ष्य है कि दूब की एक गांठ भी जीवित है तो दूब कभी भी कही भी पानी और मिटटी पाते ही फिर हरी भरी हो जायेगी। दूब कभी नही मरती दूब सनातन है जैसे हमारा धर्म सनातन है।

अक्षतः अक्षत माने जिसकी क्षति न हो, जो कही से टूटा फूटा न हो जो अक्षत नही वह हमारे लिए पूज्य नही। टूटे–फूटे बर्तन के पात्र में हम कोई चीज पदार्थ नही रखते हैं। पूजा सदैव अक्षत साबुत चावल से ही करते हैं।

फूल और फलः वृक्ष और फल के बीच में फूल है। फूल सेतु है, योग केन्द्र है, नारियल वृक्ष और श्रीफल का। अगर फूल नही तो फल नही आयेगा। अगर वृक्ष नही तो फूल नही होगा।

यदि जीवन समाज राष्ट्र और व्यक्ति विचार आचरण के बीच पुष्प रूपी सेतु नही है, योग बिन्दु नही है तो कहीं भी फलदायी नही होगा, सब कुछ फल की तरह गतिमान है। फल की दिशा में अपना योग देकर फूल मुरझा जाते है। यही योगदान है फूल का वृक्ष और फल के प्रति।

फल जब रस से भर जाता है उस रस में जब फल के भीतर का बीज पूरी तरह तैयार हो जाता है तब फल सहज ही वृक्ष से अलग हो जाता है। वृक्ष से अलग होकर पका हुआ फल अपने भीतर के बीज से एक नये वृक्ष को जन्म देकर मिट्टी में घुल मिल समाप्त हो जाता है। नया सृजन करना सृजन कर उत्पत्ति होना यही नारियल फूल श्रीफल का सत्य है।

अग्नि और जलः जीवन के हर क्षण में अग्नि व जल अनिवार्य है हर उत्सव पूजा पाठ संस्कार में अग्नि जल उसके आधार हैं। जल के असंख्य रूप, आकार, उपयोग हैं। मृत्यु अर्थात अग्नि का बुझ जाना। अग्नि बुझी नही कि शव की अग्नि का दान। जब तक हममें अग्नि है तब तक शक्ति है अग्नि शक्ति विहीन होते ही शिव शव हो जाता है तो हमारी तो स्थिति ही क्या है? अग्नि जल का योग है यज्ञ अग्नि जल हमारे देवता हैं। हमारे सारे तीर्थ जल तट पर हैं। अग्नि ही विवाह में साक्षी है।

शंखः शंख सच्चाई का प्रतीक है। शंख को ध्यान से देखिए और देखिए उसका आकार रंग बनावट। शंख के अन्दर उसकी बनावट में एक लहर है उसके भीतर से एक लहर उठ रही है। भीतर से परिक्रमा करती हुई

एक लहर लहर से जुड़ी हुई दूसरी लहर, भीतर से बाहर, मैं से हम, व्यक्ति के मैं से परिवार, परिवार से समाज, समाज से देश, देश से राष्ट्र और राष्ट्र से सम्पूर्ण सृष्टि शंख ध्वनि से एकात्म बोध कितना आश्चर्य जनक है यह शंख, इसका बजाना, विजय का प्रमाण है।

स्वास्तिकः हमारे जीवन की प्रतीक है स्वास्तिक। जिस आधार पर हमारी पूरी जिन्दगी है वह चौकोर है। स्वास्तिक चतुर्भुज है हमारे ईश देवता चतुर्भज हैं।

धर्म अर्थ काम मोक्ष यह चतुर्भुजाएं स्वास्तिक की हैं। इसी से चौकोर वेदी बनी जिस पर हमारे सभी संस्कार दान पुण्य पूजा पाठ क्रिया सम्पन्न होते हैं।

स्वास्तिक और चौकोर वेदी की चारों भुजाएं इस सच्चाई का प्रतीक है कि धर्म अर्थ काम मोक्ष इन चारों जीवन मूल्यों तथा जीवन फलों में संतुलन अनिवार्य है। इन चारों में परस्पर संतुलन बिगड़ते ही अपनी अस्मिता अपनी आस्तिकता टूट जाती है। सिद्वान्त सार में स्वास्तिक को सूर्य की प्रतिमा माना है व विश्व ब्रम्हाण्ड का प्रतीक चिन्ह माना है मध्य भाग विष्णु की कमल नाभि, रेखाओं को ब्रह्मा के चार मुख, चार हाथ व चार वेदों को निरूपित किया है। जीवन की चार अवस्थाएं बाल्यावस्था, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ व सन्यास, ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य व शूद्र एवं चतुष्पदा का आभास देते है।

कलशः हमारी संस्कृति में कलश अत्यन्त मांगलिक चिन्ह के रूप में प्रतिष्ठित है। घट को पूर्णता का प्रतीक माना गया है। इसको रखने से आराधना कार्य अनुष्ठान विशेष के पूर्ण एवं सफलीभूत होने की कामना रहती है। कहते हैं परमात्मा घट–घट व्यापी है इसलिए जीव की उपमा घट से की गई है घट साधक का शरीर है और अपने को प्रभु चरणों में समर्पित करता है। कलश को पौराणिक ग्रन्थों में ब्रह्मा, विष्णु व महेश और मातृगण का निवास बताया है। सीता जी का आविर्भाव भी घट में हुआ है। भारत में शुभ अवसरों पर धार्मिक अनुष्ठानों पर घट या कलश की स्थापना करने की हमारी प्राचीन परम्परा चली आ रही है।

आम्र पल्लवः इस वृक्ष को हमारी संस्कृति में बड़ा ही शुभ माना गया है। आम के वृक्ष का प्रत्येक भाग बड़ा ही महत्व का है। आम का वृक्ष सदा हरा भरा रहता है। मनु ऋषि ने स्वयं कहा है 'आम्र पल्लव सर्व श्रेष्ठम्'। भक्त आम्र पल्लव को स्पर्श कर अम्बे, अम्बालिके उच्चारण करके कहता है जैसे सभी ऋतुओं में आम की पत्तियॉ हरी भरी रहती हैं, वैसे ही मनुष्य आनन्दमय, प्रसन्नमुख रहे।

महालय पक्ष अर्थात श्राद्धः महालय् पक्ष अर्थात श्राद्ध अर्थात सम्पन्नता का शिखर।

जब सूर्य भगवान आषाढ़ मास में कन्या राशि में प्रवेश करते हैं तब हमारे पूर्वजों की महान आत्माओं को पृथ्वी पर प्रवेश का आदेश देते हैं। इस समय सभी पूर्वज अपने परिजनों के पास आते हैं। श्राद्ध करके ब्राह्मण भोज द्वारा अपने पूर्वजों को प्रसन्न करने का सर्वोत्तम मार्ग है।

हमारे पूर्वजों की महान आत्मायें महालय पक्ष के इन 16 दिनों के लिए पृथ्वी पर आकर अपने परिजनों को आशीर्वाद देती हैं।

वे लोग जो महालय पक्ष के 16 दिनों में किसी भी कारणवश श्राद्ध नही कर पाते है उन्हे महालय पक्ष के तुरन्त बाद आने वाले पक्ष में श्राद्ध करना चाहिए।

रीति के अनुसार श्राद्धों के दिनों में हवन करके अपने पित्रों का आवाहन करके ब्राह्मणों को पित्र स्वरूप मानकर उन्हे भोजन कराया जाता है। यदि कोई किसी कारण वश हवन कर श्राद्ध नही कर सकता तो उन्हे भोजन की सामग्री जैसे चावल, दाल, केला, दक्षिणा आदि सामग्री तर्पण करने के पश्चात् किसी ब्राह्मण को दिया जा सकता है।

यदि कोई इन पूरे 16 दिन श्राद्ध नही कर सकता तो वह अपने पूर्वज के मृत्यु की तिथि पर श्राद्ध कर सकता है।

"महालय पक्ष के श्राद्ध का जीवन में महत्व"

वेदों के अनुसार महालय पक्ष में श्राद्ध करने का कर्ता एवं उसके परिवार के जीवन में निम्न महत्व है।

1 **प्रथमा** में श्राद्ध करने पर असीम सम्पदा प्राप्त होती है।

2 **द्वितीया** में श्राद्ध करने पर प्रसव के समय होने वाली कठिनाइयों से मुक्ति मिलती है।

3 **तृतीया** में श्राद्ध करने पर पुत्री को सुयोग्य वर की प्राप्ति होती है।

4 **चतुर्थी** में श्राद्ध करने पर शत्रुओं पर विजय प्राप्ति होती है।

5 **पंचमी** में श्राद्ध करने पर उन्नति एवं सुख प्राप्त होता है।

6 **षष्टी** में श्राद्ध करने पर कर्ता को प्रशंसा एवं ख्याति प्राप्त होती है।

7 **सप्तमी** में श्राद्ध करने पर कर्ता के परिजनों को स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

8 **अष्टमी** में श्राद्ध कर बुद्धिमानी/बौद्धिकता के शिखर पर पहुँचा जा सकता है।

9 **नवमी** में श्राद्ध करने पर अच्छा जीवन साथी मिलता है या जीवनसाथी की बुरी आदतों में बदलाव लाता है।

10 **दशमी** में श्राद्ध करके इच्छाओं की पूर्ति की जा सकती है।

11 **एकादशी** में श्राद्ध कर वेदों का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

12 **द्वादशी** में श्राद्ध कर स्वर्ण अर्जित किया जा सकता है।

13 **तृयोदशी** में श्राद्ध द्वारा सम्पति एवं उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त किया जा सकता है।

14 **चतुर्दशी** में श्राद्ध द्वारा दुधर्टनाओं से बचा जा सकता है।

15 **अमावास्या** में श्राद्ध कर सुखमय जीवन प्राप्त किया जा सकता है।

"दिन-प्रतिदिन प्रयोग में लाए जाने वाले अंग्रेजी शब्दों के सरल एवं उपयुक्त हिन्दी शब्द"

देवनागरी में लिखे गए अंग्रेजी शब्द	हिन्दी शब्द
ऐब इनिश्यिो	**आरम्भ से**
ऐबोलिशन ऑफ पोस्ट	**पद समाप्त करना**
ऐबसैन्टी स्टेटमैन्ट	**अनुपस्थिति विवरण**
ऐबसैन्ट विदाउट लीव	**बिना छुट्टी लिए अनुपस्थित**
ऐबस्ट्रैक्ट बुक	**सार पुस्तिका**
ऐबस्ट्रैक्ट ऑफ अकाउण्ट	**लेखा–सार**
अकैडमिक क्वालिफिकेशन	**शैक्षणिक योग्यता**
ऐक्सैप्टैन्स ऑफ टैन्डर	**निविदा की स्वीकृति**
अकोमोडेटिंग टर्म्स	**सुविधाजनक शर्तें**
अकोमोडेशन चार्जेज़	**जगह का किराया, वास प्रभार**
टू अकॉर्ड प्रयॉरिटी	**प्राथमिकता देना**
हेड ऑफ अकाउण्ट	**लेखाशीर्ष**
ऐक्टिव कंसीड्रेशन	**सक्रिय रूप से विचार**
ऐक्ट ऑफ मिसकण्डक्ट	**कदाचार**
ऐक्चूअल्स एण्ड टार्गेट्स	**वास्तविक और लक्ष्य**

संकलनकर्ता – श्री विनोद कुमार शर्मा,
वरिष्ठ लेखाधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

गणतन्त्र दिवस के अवसर पर प्रधान महालेखाकार महोदया द्वारा राष्ट्रीय ध्वजारोहण किया गया।

प्रधान महालेखाकार महोदया द्वारा श्री मनीष कुमार सिन्हा, सहायक लेखाधिकारी को अखिल भारतीय स्तर पर एस॰ए॰एस॰ 2012 (सिविल अकांउट्स) परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर पुरस्कृत किया गया।

गणतन्त्र दिवस के अवसर पर श्री सुशील देवली, सहायक लेखाधिकारी कविता पाठ करते हुए।

गणतन्त्र दिवस के अवसर पर श्री गणेश प्रसाद, सहायक लेखाधिकारी देशभक्ति गीत गाते हुए।

कार्यक्रम का आनन्द उठाते हुए अधिकारी एवं कर्मचारीगण

गणतन्त्र दिवस के अवसर पर उत्कृष्ट एवं उल्लेखनीय कार्य निष्पादन हेतु
पुरस्कृत किये गये अधिकारी एवं कर्मचारीगण।

स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर प्रधान महालेखाकार महोदया ने राष्ट्रीय ध्वजारोहण किया।

स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर उपस्थित कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारीगण।

स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर श्री सुशील देवली, सहायक लेखाधिकारी कविता पाठ करते हुए।

निर्माणधीन आई॰ए॰एण्ड ए॰डी॰ आवासीय परिसर, कौलागङ

निर्माणधीन आई॰ए॰एण्ड ए॰डी॰ आवासीय परिसर, कौलागङ

शिवा ऑफसेट प्रेस, देहरादून द्वारा डिज़ाइन एवं मुद्रित। फोनः 0135-2715748